विशेषकर महिलाओं के लिये ...

धार्मिक स्त्रियाँ

लेखिका

सूज़ी फ्रैड्रिक

अनुवादक

फ्रांसिस डेविड

Published by

CHURCH OF CHRIST
Box 4398
New Delhi-110019

Especially For Women . . .

Righteous Women

By

Susie Frederick

Hindi Translation By

Francis David

Published by

CHURCH OF CHRIST

Box 4398

New Delhi-110019

E-mail: vinay_david2002@yahoo.co.in

davidfrancis53@rediffmail.com

Published by
Church of Christ
Box 4398
New Delhi-110019
E-mail: vinay_david2002@yahoo.co.in
davidfrancis53@rediffmail.com

Printed at
Guide Offset Printers, New Delhi

In memory of
Sister Jasmine David
an honest, gentle sister
in Christ

अनुक्रम

भूमिका	9
आप परमेश्वर के लिये महत्त्वपूर्ण हैं	11
आशीषें और जिम्मेवारियाँ	14
एक दूसरे की सहायता करना	16
पहुनाई करना - एक मसीही सेवा	18
बूढ़ी स्त्रियाँ	20
आप सिखा सकती हैं	23
बच्चों को सिखाना	25
हम अपने बच्चों को क्या सिखायें?	27
मसीही स्त्री के लिये परमेश्वर की योजना	29
लोग क्या कहेंगे?	33
परमेश्वर किस बात से प्रसन्न होता है?	37
ऐसी स्त्री जो प्रशंसा के योग्य है	41
सारा का विश्वास	44
रिबका, इसहाक के लिये परमेश्वर का चुनाव	46
परमेश्वर की सहायता	50
एक सामरी स्त्री का प्रभाव	52
प्रिसकिल्ला-यीशु मसीह में एक सहायक	54
लुदिया - एक अच्छा उदाहरण	56

शैतान का सामना करो 57
क्या यह काफ़ी है? 59
केवल सुनने वाले नहीं 61
जीवन का सबसे बड़ा चुनाव 63
एक संतुलित जीवन 65
दर्पण 68
एक ऐसी सुन्दरता जो कभी मुरझाती नहीं 69
क्या हम परमेश्वर में भरोसा रखते हैं? 72
प्रार्थना का मेरे जीवन में क्या अर्थ है? 74
शोक करना या दु:खी होना 77
एक योग्य सहायक 79
प्रभु में सदा आनन्दित रहो 82
प्रसन्न कैसे रहें? 83
ज्ञान में आगे बढ़ना 85
संयम रखने में आगे बढ़ना 87
दु:खों के द्वारा धीरज उत्पन्न होता है 89
प्रभु पर आशा लगाए रखना 91
भीतरी शान्ति को खोजना 94
अपुल्लोस की नम्रता 97
जो सबसे कीमती वस्तु है उसे जुए में लगाना 99

भूमिका

यूं तो स्त्रियों के विषय में बहुत-सी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, परन्तु प्रस्तुत पुस्तक एक ऐसी पुस्तक है जो बहुत ही साधारण तरीके से इसलिये लिखी गई है, ताकि कोई भी स्त्री इसे पढ़कर अपने जीवन को परमेश्वर के समीप और अधिक ला सके। परमेश्वर को आज ऐसी स्त्रियों की आवश्यकता है, जिनका जीवन भक्तिपूर्ण है तथा जो अपने परिवार की देखभाल इस तरह से करती हैं जैसी परमेश्वर उनसे अपेक्षा करता है। मैं भी एक मसीही स्त्री हूं और मैं आपको बताना चाहती हूं कि आप परमेश्वर के लिये महत्वपूर्ण हैं।

बाइबल ऐसी स्त्री के विषय में कहती है, "कि उसके पुत्र उठ उठकर उसको धन्य कहते हैं, उसका पति भी उठकर उसकी ऐसी प्रशंसा करता है: बहुत सी स्त्रियों ने अच्छे-अच्छे काम तो किए हैं परन्तु तू उन सभों में श्रेष्ठ है। शोभा तो झूठी है और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।" (नीतिवचन 31:28-30)।

मेरी आशा है कि अधिक से अधिक स्त्रियां इस पुस्तक को पढ़कर इससे लाभ उठा सकेंगी।

ऐलसी एफ़. डेविड
(Elsy F. David)

आप परमेश्वर के लिये महत्त्वपूर्ण हैं

प्रभु की देह अर्थात कलीसिया में प्रत्येक सदस्य महत्त्वपूर्ण है। (रोमियों 12:4-5)। इस बात की तुलना मनुष्य के शरीर से की गई है, जिस प्रकार से हमारे शरीर में प्रत्येक अंग महत्व रखता है तथा प्रत्येक का अपना एक विशेष कार्य है। (देखिये 1 कुरि. 12:14-27)।

जिस प्रकार से परमेश्वर ने देह में प्रत्येक अंग के लिये, एक कार्य करने के लिये दिया है उसी प्रकार से प्रत्येक सदस्य के लिये मसीह की देह में कुछ कार्य करने के लिये है। कोई भी दो मसीही एक से नहीं होते, इसलिये जब एक उपासना में नहीं आता या कलीसिया के कार्यों में भाग नहीं लेता तब सारी देह को इससे दु:ख पहुंचता है। यानि देह का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा गायब है।

प्रभु की देह (कलीसिया) में आपका क्या कार्य है? परमेश्वर ने आपको ऐसी कौन-सी योग्यताएं दी हैं जो आप उसके लिये इस्तेमाल कर रहे हैं? क्या घरों में जाकर आप स्त्रियों तथा बच्चों को बाइबल के विषय में बताती हैं? क्या आप बीमार लोगों की देखभाल करती हैं? क्या आपने कभी निर्धनों को कपड़े सिलकर दिये हैं? क्या जो लोग ज़रूरतमंद है उनकी कभी आपने सहायता की है? क्या आप परमेश्वर की इच्छा के विषय में अपने परिवार के लोगों को बताती हैं? क्या आप दूसरों के प्रति आदर सत्कार दिखाती हैं? अतिथियों के प्रति आपका व्यवहार कैसा है? आप से परमेश्वर कुछ अधिक की अपेक्षा नहीं कर रहा है। वह जानता है कि आप कितना योगदान कर सकती हैं। वह चाहता है कि आप अपनी योग्यताओं को उसके लिये इस्तेमाल करें। जो भी आप में योग्यता है उसे काम में लाने से पीछे न हटें। जब आप परमेश्वर के लिये कार्य करती हैं वह आपकी सहायता करेगा।

मत्ती के 25 अध्याय में, यीशु ने एक मनुष्य के विषय में बताया था, जिसने यात्रा पर जाने से पहिले अपने दासों को पैसे दिये थे। उसने प्रत्येक को उसकी योग्यता अनुसार पैसे दिये थे, यह जानते हुए कि उसे इस्तेमाल करने के लिये किसके पास कितनी योग्यता है। एक दास को पांच तोड़े पैसे के रूप में दिये गये थे, और उसने उस पैसे का अच्छा निवेश किया अर्थात उसे इस्तेमाल करने में बुद्धिमानी बरती। दूसरे दास को दो तोड़े दिये गये, और उसने भी बुद्धिमानी के साथ उसका इस्तेमाल किया। तीसरे दास को एक तोड़ा दिया गया परन्तु उसने उस एक को भी बुद्धिमानी से इस्तेमाल नहीं किया। उसने इसे किसी व्यापार में नहीं लगाया और न ही उससे और कमाने का प्रयास किया। बल्कि उसने उसे ज़मीन में दबा दिया तथा अपने स्वामी के आने की प्रतिक्षा करने लगा। घर का स्वामी यात्रा से जब वापस आया तो वह पहिले तथा दूसरे दास से बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु तीसरे दास से वह बहुत क्रोधित हुआ। जिस तोड़े को उसने बुद्धिमानी से इस्तेमाल नहीं किया वह उससे ले लिया गया तथा वो पहिले वाले दास को दे दिया गया। तब स्वामी ने आज्ञा दी कि इस निकम्मे दास को सदा के लिये बाहर के अन्धेरे में डाल दो।

यीशु ने यह कहानी हमें यह दिखाने के लिये बताई है कि यदि हम परमेश्वर द्वारा दी गई योग्यताओं का इस्तेमाल नहीं करेंगे तो हमारे साथ क्या हो सकता है। यदि हमारे पास योग्यताएं है और उन्हें हम छुपाते हैं या फिर उन्हें इस्तेमाल नहीं करते, तब परमेश्वर हमसे वह योग्यताएं ले लेगा। हमें इस प्रकार से नहीं कहना चाहिये, "उसके पास जितनी योग्यता है वो मेरे पास नहीं है, इसलिये मैं चाहती हूं कि यह कार्य वोही करे।" परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को कुछ योग्यताएं दी हैं, और उसके लिये हम में से प्रत्येक महत्त्वपूर्ण है। यदि प्रत्येक मसीही स्त्री जो भी योग्यता उसके पास है उसके अनुसार

उसकी सेवा करेगी तो परमेश्वर उससे प्रसन्न होगा। घर का स्वामी उस दास से भी उतना प्रसन्न था जिसे दो तोड़े मिले थे क्योंकि उसने अपने पैसे या योग्यता का बुद्धिमानी से इस्तेमाल किया था। प्रेरित पौलूस ने 1 कुरि. 12 में बताया है कि हमे इसलिये अपने आपको नीचा नहीं समझना चाहिये क्योंकि हमारे पास कम योग्यता है या वो योग्यता नहीं है जो दूसरे के पास है। परमेश्वर प्रत्येक को उसकी योजना अनुसार योग्यता देता है। प्रत्येक जन को अपनी योग्यता का इस प्रकार से इस्तेमाल करना चाहिये ताकि इससे सारी देह (कलीसिया) की उन्नति हो (इफिसियों 4:16)।

एक और बात है जिस पर हमें ध्यान देना चाहिये वोह यह, कि यदि हम अपनी योग्यताओं का इस्तेमाल बुद्धिमानी से करें तब यीशु हम पर और भरोसा करके हमें और भी जिम्मेवारियां दे सकता है। यीशु ने कहा था, "क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जायेगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा, परन्तु जिसके पास नहीं है उससे वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा।" (मत्ती 25:29)।

आपके जैसा कोई नहीं है। आपका स्थान कोई नहीं ले सकता। जो आपके पास योग्यतायें हैं वो शायद किसी और के पास नहीं है। आईये अपने अन्दर योग्यताओं को ख़ोजें तथा अच्छा से अच्छा कार्य करें। अध्ययन करें, प्रार्थना करें, परमेश्वर हमारी सहायता करेगा तथा हमें और भी अधिक आशीषित करेगा।

आशीषें और जिम्मेवारियाँ

प्रभु यीशु ने हमें लूका 12:48 में बताया है, "इसलिये जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया है, उस से बहुत मांगेगे। (लूका 12:48)। जबकि परमेश्वर ने हमें बहुतायत से आशिषित किया है, तब वह हमसे यह अपेक्षा करता है कि हम अपनी आशीषों का इस्तेमाल बुद्धिमानी से करें। परमेश्वर ने आपको कैसे आशीषित किया है? इसके बदले में वह आपसे क्या चाहता है? वास्तव में प्रत्येक जन को इसका उत्तर व्यक्तिगत रूप से देना चाहिये।

परमेश्वर ने किस प्रकार से आपको स्वस्थ रखा है? यदि आपका स्वस्थ सही है तो आपके पास यह सुअवसर है कि आप उन लोगों की सहायता करें जो बीमार है। शायद उन्हें यह आवश्यकता है कि कोई उनके घर में खाना पकाकर भेजे या जब तक वह ठीक न हो जाएं उनके बच्चों की देखभाल कर सकें। इस प्रकार से, आपका अच्छा स्वास्थ्य किसी और के लिए एक आशिष का कारण हो सकता है। क्या परमेश्वर ने आपको पैसे से अशीषित किया है? यदि आपके पास पैसा है तो आप इसे दूसरों के हित के लिये किस प्रकार से इस्तेमाल कर सकते हैं? सारे संसार में आज लोगों को यह जानने की आवश्यकता है कि परमेश्वर का पुत्र, प्रभु यीशु मसीह है। पैसे की आवश्यकता इसलिये होती है ताकि सुसमाचार प्रचारकों की सहायता की जा सके? और उन्हें इस योग्य बनाया जा सके ताकि वे अपना समय प्रचार करने में व्यतित कर सकें। शायद आप कुछ ऐसे लोगों को जानती हैं, जिन्हें खाना, कपड़ा तथा जीवन की और अन्य वस्तुओं की आवश्यकता है? आपका पैसा उनकी भलाई के लिये इस्तेमाल हो सकता है। आप जैसे मसीहीयों का प्रेम लोगों के मनों को सुसमाचार के लिये खोलेगा।

क्या परमेश्वर ने आपको अच्छी शिक्षा से आशीषित किया है? यदि आप इस लेख को पढ़ रही हैं तो आप संसार के कई लोगों से अधिक आशीषित हैं। इस पापी संसार के लिये केवल यीशु का सुसमाचार एक आशा है। प्रेरित पौलूस ने लिखा था, "क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। (रोमियों 1:16)। कोई भी मनुष्य जब सुसमाचार में विश्वास लाता है तथा उसको मानता है तब उसको पापों से क्षमा मिलती है (रोमियों 6:17-18) प्रत्येक जन को सबसे पहिले सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है, क्योंकि विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है। (रोमियों 10:17)। क्या आप उन्हें वचन सिखायेंगे जो अपने आप पढ़ नहीं सकते? अपनी आशिषों का उपयोग कीजिये ताकि उससे दूसरों को लाभ हो सके और परमेश्वर इस बात से प्रसन्न होगा। यदि आप ऐसा करेंगे वह आपको बहुत आशिषित करेगा। अपनी अशीषों को गिनें तथा जिम्मेवारियों को समझें।

एक दूसरे की सहायता करना

बाइबल हमें बताती है जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा को मान लेता है, तब परमेश्वर उसका पिता बन जाता है। (गलतियों 3:26-27; रोमियों 8:13-17)। जबकि सब जो उसकी आज्ञाओं को मानकर उसकी सन्तान बन जाते हैं तब इसका अर्थ यह हुआ कि वे सब आपस में "भाई-बहन" हैं। इस तरह से, कलीसिया भी एक बड़े परिवार की तरह है।

परमेश्वर चाहता है कि हम अपने परिवारों से प्रेम करें और हम करते भी हैं। जिस प्रकार से हम अपने परिवारों के लिये खाने, कपड़े तथा अन्य वस्तुओं का प्रबंध करते हैं तथा अपने परिवारों में खुशहाली देखना चाहते है, उसी प्रकार से हमें अपने आत्मिक परिवार से भी प्रेम करना चाहिये तथा जब भी आवश्यकता पड़े हमेशा सहायता के लिये आगे बढ़कर आना चाहिये और इस आत्मिक परिवार में अपने भाई-बहनों की आवश्यकता पड़ने पर सहायता करनी चाहिये।

हम अपने परिवार में एक दूसरे के साथ सहभागिता करते हैं। उनके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं ताकि वह उन्हें आशीषित करे। हमें खुशी होती है जब परमेश्वर उन्हें आशीषित करता है। जब वह दु:ख या किसी दर्द में होते है तब हम अपनी तरफ से पूरा प्रयत्न करते हैं ताकि वे अपने दु:ख से छुटकारा पा सकें। हमारे "आत्मिक परिवार को भी इसी प्रकार की सहभागिता की आवश्यकता होती है। यदि हम अपने आत्मिक भाईयों और बहनों से प्रेम करते हैं तब हर एक स्थिति में चाहे वो दु:ख का समय हो या खुशी का हम उनके साथ भागी होंगे। (रोमियों 12:15)। अर्थात हम एक दूसरे का हाथ बंटाते हैं। किसी ने कहा है कि जब दो जन मिलकर किसी भार को

उठाते हैं तो ऐसा लगता है कि वो भार 10 किलो न होकर पांच किलो है अर्थात वो भार आधा होने लगता है, और ज़रा सोचिये जब दो जन मिलकर खुशी मनाते हैं तो खुशी दो गुनी हो जाती है।

हमारे शारीरिक परिवार हमारे पर निर्भर करते हैं- तथा हम उन पर निर्भर करते हैं और यह इसलिये ताकि हम उनसे भौतिक तथा आत्मिक सहायता प्राप्त कर सकें। आईये अपने बड़े आत्मिक परिवार अर्थात् कलीसिया के बारे में भी हम ऐसा ही विचार रखें। बाइबल हमें सिखाती है: ''यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो नम्रता के साथ ऐसे को संभालो...... एक दूसरे के भार उठाओ'' (गलतियों 6:1-2)।

जब कोई मसीही विश्वास से गिर जाता है तथा कलीसिया को छोड़कर चला जाता है तब हम जो मजबूत है, क्या उसको वापस लाने का प्रयास करते हैं?

पहुनाई करना - एक मसीही सेवा

मसीही स्त्रीयाँ होते हुए कई बार हम ऐसा अनुभव करते हैं, कि परमेश्वर की सेवा करने में हम बहुत सीमित हैं। जहां पर पुरुष लोग उपस्थित होते हैं वहां हम प्रार्थना में अगुवाई नहीं कर सकते, प्रचार नहीं कर सकते या किसी भी रूप में अगुवाई नहीं कर सकते। (1 तीमुथियुस 2:11-12; 1 कुरि. 14:34)। परन्तु पहुनाई (अतिथी सत्कार) करने में हम बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। मसीहीयों को यह आज्ञा दी गई है कि वह पहुनाई करने वाले हो, "परस्पर आदर करने में एक-दूसरे से बढ़ चलो। पहुनाई करने में लगे रहो।" (रोमियों 12:10, 13)। जो लोग परमेश्वर की सेवा करते हैं उन्हें यह समझना चाहिए कि मसीही लोगों की पहुनाई करना एक अच्छे सुअवसर की बात होती है। मसीहीयों को अपने घरों में ठहराना तथा उन्हें भोजन खिलाना एक बहुत ही अच्छी और आशीष की बात है। कई बार प्रचारकों तथा बाइबल को सिखाने वाले अगुवों की पहुनाई करने के द्वारा हम सुसमाचार फैलाने में अपना योगदान देते हैं (मत्ती 10:41)। पहुनाई करने में कई बार अजनबी भी हो सकते हैं तथा कुछ ऐसे लोग भी हो सकते हैं जिन्हें हम जानते हैं। परन्तु इस बात का ध्यान रखें कि ऐसा करने में झूठे प्रचारकों की सहायता न करें। अनुचित शिक्षाओं का प्रचार करने में उनका साथ न दें जिस प्रकार से 2 यूहन्ना 9-11 में लिखा है, "यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उसके बुरे कामों में साझी होता है।" प्रभु यीशु ने हमें मत्ती 25:35-40 में सिखाया था कि "मसीहीयों की सहायता करना तथा उनकी पहुनाई करना उसकी सेवा करने के बराबर है।" आईये पहुनाई करने में पीछे

न हटें ताकि हम उन लोगों में शामिल हों जिनसे राजा अर्थात् प्रभु यीशु कहेगा, "हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।" (मत्ती 25:34)। बाइबल में लिखी हुई इस बात को याद रखें, "इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाईयों के साथ।" (गलतियों 6:10)।

बाइबल शिक्षा देती है: कि, "पहुनाई करना न भूलना क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने में स्वर्गदूतों की पहुनाई की है" (इब्रानियों 13:2)।

"बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे की पहुनाई करो।" (1 पतरस 4:9)। "पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उसमें उन की सहायता करो; पहुनाई करने में लगे रहो" (रोमियों 12:13)।

बूढ़ी स्त्रियाँ

बूढ़े होना जीवन का एक भाग है। यह जीवन चलता रहता है तथा एक समय आता है कि हम बूढ़े हो जाते हैं। परमेश्वर ने जैसी हमारी रचना की है यह उसकी योजना का एक भाग है। नीतिवचन का लेखक कहता है, "पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं, वे धर्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं। (नीतिवचन 16:31)। कई लोग जब बूढ़े होने लगते हैं तब अपने कार्य में ढीले पड़ने लगते हैं तथा एक बड़ा ही शान्तपूर्ण माहोल पसन्द करते हैं। यह बात उचित है क्योंकि वृद्धावस्था के साथ अक्सर ऐसा होता है, परन्तु मसीही जीवन में ऐसा नहीं होता क्योंकि मसीही जीवन से कोई रिटायर नहीं होता। परमेश्वर ने कोई भी ऐसी आयु सीमा मसीही के लिये नियुक्त नहीं की है। यीशु ने कहा था, "परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।" (मत्ती 24:15)। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर आप से कुछ अधिक की अपेक्षा कर रहा है। आप शायद शारीरिक रूप से इतना करने के योग्य नहीं है। परन्तु इसका अर्थ यह भी नहीं है कि आप परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर रही है, शायद आप कहें, "मैंने प्रभु के लिये बहुत कार्य किया है, अब किसी जवान स्त्री को यह कार्य करना चाहिये।" बुद्धिमान राजा सुलेमान ने ऐसा कहा था, "मूर्ख छाती पर हाथ रखे रहता है और अपना मांस खाता है।" (सभोपदेशक 4:5)। जिस प्रकार से एक सुस्त व्यक्ति अपने आप को शारीरिक रूप से हानि पहुंचाता है उसी प्रकार से यदि एक मसीही अपने आप को प्रभु के कार्य से दूर कर लेता है तथा कलीसिया के कार्यों में भाग नहीं लेता है, तब वह अपने जीवन को आत्मिक रूप से नष्ट कर रहा है। मैं जानती हूं कि आप मूर्ख नहीं बनना चाहती तथा अपने आप को नष्ट नहीं करना चाहती, तब परमेश्वर आप से क्या चाहता है?

1. बूढ़ों में बुद्धि पाई जाती है, और दीन लोगों में समझ होती है। (अय्यूब 12:12) क्योंकि आप काफ़ी उमर-दराज़ हैं तथा अनुभवी हैं, इसलिये आप जवानों को अच्छी से अच्छी सलाह दे सकती हैं। आप उनके लिये परामर्श का एक स्रोत है। यदि आपको सलाह देने का सुवअवसर मिलता है तो इन्हें बड़े प्रेम के साथ सलाह दीजिये रौब के साथ नहीं।

2. "इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियों का चाल-चलन पवित्र लोगों- सा हो, दोष लगाने वाली और पियक्कड़ नहीं, पर अच्छी बातें सिखाने वाली हो।" (तीतुस 2:3)।

एक अच्छा उद्धाहरण दूसरों के सामने रखना आपके लिये बहुत आवश्यक है। आप अपना जीवन इस प्रकार से बितायें ताकि जवान स्त्रियां आप से सीखें तथा आपका आदर करें और वे आपके जीवन का अनुसरण करें जैसे आप यीशु का अनुसरण करती हैं।

3. "वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें, और संयमी, पतिव्रता, घर का काम-काज करने वाली, भली और अपने-अपने पति के आधीन रहने वाली हो, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाएं।" (तीतुस 2:4-5) ऐसा मत सोचिये कि आपने अच्छा उदाहरण दूसरों के सामने रख दिया और अब आपका काम समाप्त हो गया है। अच्छा उदाहरण रखने का उद्देश्य है कि आप जवान स्त्रियों को अच्छी तरह से सिखायें। उन्हें शिक्षा दें कि उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिये। यदि आपका जीवन बाइबल की शिक्षा के अनुसार एक अच्छा उदाहरण नहीं है, तब लोग शायद परमेश्वर के वचन की निन्दा करें।

जब आप बुढ़ापे की ओर अग्रसर होती हैं, तब आप को गलतियों 6:9 को याद रखना चाहिये, जहां इस प्रकार से लिखा है, "हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।"

परमेश्वर की सेवा में निरन्तर लगे रहने से, हमें इस बात से पूरा निश्चय हो जाता है कि यीशु के द्वारा हमें अवश्य प्रतिफल मिलेगा। इसलिये बाइबल परमेश्वर का वचन कहता है, "जो दुख तुझ को झेलने होंगे, उनसे मत डर, प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।" (प्रकाशितवाक्य 2:10)। बूढ़ा होना एक आशिष की बात है। नीतिवचन का बुद्धिमान लेखक कहता है, "पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं, वे धर्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं। (नीतिवचन 16:31)। जब बूढ़ी स्त्रियां परमेश्वर के नियम अनुसार नहीं चलती तब वे अपने मन में दूसरों के प्रति ग़लत बातें बोलती हैं तथा कई बार ऐसी बातें बोलती हैं जिससे दूसरों को चोट पहुंचती हैं। बूढ़े होकर परमेश्वर के साथ चलना बुद्धिमानी की बात है।

आज इस संसार को ऐसी स्त्रियों की आवश्यकता है जो बूढ़ी होने पर भी ऐसे सुअवसरों की खोज में रहती हैं कि वह समाज तथा अपने आस-पास के लोगों के लिये कुछ कर सकें। शायद जब यह स्त्रियां जवान थीं तब समाज के लिये कुछ करने में असमर्थ थीं, क्योंकि वे परिवार की बहुत सी जिम्मेदारियों से घिरी हुई थीं।

आप सिखा सकती हैं

यीशु ने कहा था, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं" (मत्ती 28:18-20)।

अनेक मसीही बड़ी ईमानदारी से यह विश्वास करते हैं कि वे दूसरों को परमेश्वर का वचन नहीं सिखा सकते। परन्तु परमेश्वर ने हमें, सुसमाचार सिखाने की आज्ञा दी है, हमें यह बात दृढ़ता से जाननी चाहिये कि यदि हम उससे सहायता मागें तो वह हमारी सहायता अवश्य करेगा। आम सभा में जहां पुरुष भी शामिल हो, स्त्रियों को नहीं सिखाना चाहिये। (1 तीमु. 2:12)। परन्तु कई बार ऐसे समय तथा अवसर होते हैं जब हम सिखा सकते हैं। आईये कुछ ऐसे "कारणों" को देखें जिन्हें हम न सिखाने के विषय में देख सकते हैं तथा देखें बाइबल इन कारणों के विषय में क्या कहती है।

मूसा की तरह शायद कुछ स्त्रियां कहें, "मैं इतनी निपुण नहीं हूं" (निर्गमन 4:10)। परमेश्वर यह नहीं चाहता कि प्रचार करने के लिये हमें बहुत बढ़िया बोलने वाला या बहुत साहसी होना आवश्यक है। परन्तु वह चाहता है कि हम सिखायें। उसने मूसा से पूछा था, "मनुष्य के मुंह को किसने बनाया है? और मनुष्य को गूंगा वा बहिरा वा देखने वाला, वा अन्धा मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है?" (निर्गमन 4:11)। परमेश्वर जिसने हमें बनाया है, हमारी शक्ति तथा हमारी कमज़ोरियों को जानता है। वह हमसे कुछ ऐसा करने के लिये नहीं कह रहा जो हम करने के योग्य नहीं है। इसलिये जबकि वह हमें आज्ञा देता है कि हम सिखायें तो हमें विश्वास करना चाहिये कि वह इस आज्ञा को मानने में हमारी सहायता करेगा। परमेश्वर के लिये कुछ कठिन नहीं है।

कुछ ऐसे लोग भी हैं जो पढ़े लिखे तो नहीं है तथा उनके पास कोई प्रशिक्षण भी नहीं है, जिस प्रकार से पतरस तथा यूहन्ना के पास था (प्रेरितों 4:13), परन्तु वे हियाव के साथ यीशु के विषय में बताने से रूकते नहीं। वे जानते हैं कि परमेश्वर लोगों से क्या करने को कहता है और इस कार्य के लिये इतनी ही योग्यता काफी है। यदि हमें यह सिखाया गया है कि कोई व्यक्ति एक मसीही किस प्रकार से बन सकता है तब हम इसी बात को सरलता से दूसरों को भी सिखा सकते हैं। बाइबल अध्ययन द्वारा जब हम ज्ञान में बढ़ते हैं, तब हम सत्य को और भलि-भांति सिखा सकते हैं।

कुछ ऐसा सोचते हैं कि वे ग़रीब हैं तथा दुनियावी रूप से उनके पास कुछ नहीं है इसलिये कोई उनकी सुनेगा नहीं। क्या आपको यीशु के ये शब्द याद हैं? उसने कहा था, "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है।" (मत्ती 8:20)। यीशु का कोई अपना घर नहीं था जिसे वह अपना कह सकता। इस संसार का धन परमेश्वर के सामने कोई महत्व नहीं रखता। वह चाहता है कि हम "भले कामों में धनी हो" (1 तीमु. 6:18)। यदि हम दूसरों के लिये अच्छे उदाहरण हैं, तब लोग हमारा आदर करेंगे, तथा वे हमारे सिखाने पर और भी ध्यान लगायेंगे।

हमें यह इन्तज़ार नहीं करना चाहिये कि जब सब कुछ सही हो जायेगा तभी हम सिखाएंगे। जितना भी आप जानती हैं, आज से सिखाना आरंभ कर दें। बाइबल का और अधिक अध्ययन करें ताकि आप अच्छी तरह सिखाने के योग्य हो सकें। और हाँ याद रखिये कि, यीशु ने यह प्रतिज्ञा की है, "मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं" (मत्ती 28:20) और परमेश्वर ने कहा है, "मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।" (इब्रानियों 13:5)।

बच्चों को सिखाना

एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य जो हम कर सकते हैं वो है अपने बच्चों को परमेश्वर के विषय में सिखाना। यह एक ऐसी जिम्मेवारी है जो माता और पिता दोनों के द्वारा निभाई जानी चाहिये। परन्तु, चाहे कुछ भी हो माता के पास बच्चों को सिखाने के अधिक अवसर होते हैं, क्योंकि घर में वह उनके साथ बहुत समय बिताती हैं। जबकि हम प्रत्येक प्रकार से परमेश्वर की सेवा करते हैं तौभी हमें पूरा प्रयत्न करना चाहिये ताकि अपने सिखाने की योग्यता को हम बढ़ा सकें।

सिखाते समय साधारण शब्दों का प्रयोग करें ताकि बच्चे असानी से समझ सकें। बाइबल की कहानियां पढ़कर उन्हें समझायें। बार-बार उन्हें कहानियां बताईये, जबकि आप सिखाने के लिये अपने आपको तैयार करती हैं। जब आप कहानी को भली-भांति समझ लेंगी तब आप बड़ी अच्छी तरह से बच्चों को समझा सकेगी। आप ऐसे शब्दों को इस्तेमाल कर सकती है जिन्हें बच्चे सरलता से समझ सकें। कहानी बताते समय इस बात का ध्यान रखें कि किसी वास्तविक बात में बदलाव न लाया जाए- अपनी तरफ से किसी ऐसी बात को न जोड़े जो हमें बाइबल में नहीं मिलती।

आज के जो हालात हैं उनकी बाइबल की कहानियों से तुलना कीजिये, यह सिखाने के लिये कि हमारा मसीही व्यावहार कैसा होना चाहिये। उदाहरण के लिये हम देखते हैं कि यीशु के जीवन से जुड़ी हुई ऐसी बहुत सी घटनाएं हैं जो हमें बताती हैं कि यीशु एक बहुत ही सहायता करने वाला व्यक्ति था। प्रेरित पौलूस के जीवन में हम देखते हैं कि उसने कठिन से कठिन समयों में भी उपासना करना नहीं छोड़ा। अदन की बाटिका में आदम ने परमेश्वर से झूठ बोला, परन्तु वह परमेश्वर को धोखा नहीं दे सका, क्योंकि परमेश्वर सब कुछ

जानता है। बच्चों को यह सिखाने की आवश्यकता है कि हमारे दैनिक जीवनों में मसीही व्यवहार का होना बहुत आवश्यक है।

जब आपके बच्चे छोटे होते हैं तभी से उन्हें सिखाना आरंभ कीजिये। जो बातें वे अभी सीखेंगे वे उनके जीवन में हमेशा यादगार बन कर रहेगा। अपने बच्चों के साथ अपने पड़ोस के बच्चों को भी सीखने का निमन्त्रण दीजिये ताकि बाद में वे भी प्रभु यीशु की शिक्षा की ओर आकर्षित हो सकें।

कितना अच्छा होगा यदि आपके बच्चे आपको बाइबल का अध्ययन करते हुए देखें। यदि वे देखते हैं कि यह बात आपके लिये बहुत महत्त्व रखती है, तब बड़े होकर वे भी इसे महत्त्व देंगे। इस बात को याद रखिये कि वे आपको हमेशा देख रहे हैं तथा वे आपके कार्यों से और आपके द्वारा बोले गए शब्दों से बहुत कुछ सीखेंगे। आज कितनी मताएं ऐसी हैं जो अपने बच्चों को रविवार (सन्डे) को अराधना में ले जाना कोई आवश्यक नहीं समझती। जब वे उपासना सभा में होतीं हैं तब उनके बच्चे घर में टी.वी. देख रहें होते हैं। हमें अपने बच्चों को सिखाना है कि वे आत्मिक बातों को पहिला स्थान दें।

किसी भी बच्चे के लिये यह कितनी आशिष की बात होगी कि उसकी माता-एक धार्मिक स्त्री है, क्योंकि वह हमेशा उसे परमेश्वर की बातें याद दिलाती रहेंगी।

हम अपने बच्चों को क्या सिखायें?

छोटे बच्चों को सिखाने का बोझ अक्सर माता पर ही पड़ता है, और इसका साधारण-सा कारण यह है कि, वह पिता से अधिक बच्चों के साथ समय बिताती है। इस प्रश्न के उपर हमें बड़ी गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है: किं "हम अपने बच्चों को क्या सिखायें?"

हमें उन्हें बाइबल की आरंभिक सच्चाईयों तथा प्रमाणों के विषय में सिखाना चाहिए। ऐसे कुछ प्रमाण यह है जैसे:

(1) परमेश्वर ने इस संसार को तथा इसमें जितनी वस्तुएं है उन्हें बनाया है।

(2) परमेश्वर हम सबसे प्रेम करता है।

(3) परमेश्वर हम सबकी देखभाल करता है।

एक छोटे बच्चे के साथ बात करते हुए शायद हमें इस प्रकार से कहना पड़े: "उस छोटी-सी चिड़िया को देखो?" "परमेश्वर ने इस चिड़िया को बनाया है। परमेश्वर इस चिड़िया की देखभाल करता है।" या आप इस तरह से भी कह सकती हैं: "परमेश्वर तुम से प्रेम करता है", "वह तुम्हें खाना देता है।", "तुम्हें उसने तुम्हारी देखभाल करने के लिये एक माँ दी है।"

जब आपका बच्चा इन आरंभिक बातों को समझने लगे, तब आप उसे बाइबल की कहानियां सुनाना आरंभ करें। छोटे बच्चे बाइबल में दिये गये बच्चों की कहानियां अधिक पसंद करते हैं। जैसे समुएल, जो कि एक प्रीस्ट की सहायता करता था। (1शमुएल 3), नामान के घर में काम करने वाली छोटी लड़की (2 राजा 5:1-14)। यीशु जब छोटा लड़का था (लूका 2:41-52), एक छोटा लड़का जिसने अपना खाना दूसरों के साथ बांटकर खाया (यूहन्ना 6:1-14)। यरीहो

की दिवारे गिरने वाली कहानी भी उन्हें बहुत पसन्द आयेगी (यहोशु 6:1-24), दाऊद तथा गोलियाथ (1शमुएल 17), युसुफ़ का जीवन (उत्पत्ति 37-50), तथा यीशु ने जो आश्चर्यक्रम किये थे, यह सब बच्चों को बहुत प्रभावित करते हैं। छोटी-छोटी तस्वीरें बनाकर दिखाने से कहानियों द्वारा बच्चों को सिखाया जा सकता है।

जब आपके बच्चे बड़े होने लगते हैं तब आप उनको पाप के विषय में बताइये तथा उन्हें बतायें कि पापों से क्षमा कैसे मिलती है? कलीसिया क्या है? तथा इसके सदस्य किस प्रकार से बना जा सकता है? मसीही जीवन किस प्रकार से व्यतीत किया जाता है तथा दूसरों के सामने किस प्रकार से अच्छा उदाहरण रखा जा सकता है?

एक और महत्त्वपूर्ण बात के ऊपर ध्यान देना आवश्यक है और वो यह है कि अपने बच्चों को सिखाते समय हम इस बात का ध्यान रखें कि जो बात हम उन्हें सिखा रहे हैं वो वास्तविकता है कोई मनगढ़ंत कहानी नहीं है। उनके ऊपर यह प्रभाव डालें कि यह एक पक्का प्रमाण है कि जो कुछ वे बाइबल से सीख रहें हैं वो सत्य है। हमें उन्हें कहानियों तथा सत्यों में फ़रक दिखाना चाहिये। कुछ किस्से कहानी धार्मिक रूप से सिखाये जाते हैं तथा कुछ का उद्देश्य केवल मनोरंजन के लिये होता है। परन्तु इनका उद्देश्य चाहे कुछ भी हो, हमारे बच्चों को यह जानने की आवश्यकता है कि मन गढ़ंत कहानियां बनावटी होती हैं, तथा बाइबल में जो घटनाएं घटी हैं वे सत्य पर आधारित हैं।

अन्त में आपको मैं उत्साहित करना चाहुंगी कि आप अपनी बाइबल को स्वयं पढ़ें, क्योंकि यदि आपको जिसके विषय में पता नहीं है उसे आप कैसे सिखायेंगी? बाइबल का अध्ययन कीजिये तभी आप बच्चों को भली-भांति सिखा सकेंगी।

मसीही स्त्री के लिये परमेश्वर की योजना

परमेश्वर के लिये आप महत्त्वपूर्ण हैं, तथा उसके पास आपके लिये एक योजना है। यदि आप ऐसा जीवन व्यतित कर रही हैं जैसा परमेश्वर चाहता है तो वह आपको कई तरीकों से आशिष देगा। किस प्रकार से परमेश्वर चाहता है कि आप अपना जीवन व्यतीत करें? मसीही स्त्रियों को किन-किन बातों से दूर रहने के लिये कहा गया है? बाइबल में इन प्रश्नों का उत्तर दिया गया है अर्थात परमेश्वर का वचन जो लिखित रूप में दिया गया है हमें बताता है कि एक मसीही स्त्री को कैसा होना चाहिए।

संसार की रचना के छटवें दिन परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की थी। सबसे पहिले उसने पुरुष को बनाया परन्तु परमेश्वर यह भी जानता था कि पुरुष को एक सही सहायक की आवश्यकता पड़ेगी (उत्पत्ति 2:18) इसलिये परमेश्वर ने पुरुष को गहरी नींद में सुला दिया। जब वह सो रहा था तब परमेश्वर ने पुरुष की एक पसुली निकालकर उसकी सन्ती मांस भर दिया और उसने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया।" (उत्पत्ति 2:21-22)। आरंभ से ही परमेश्वर ने स्त्री को कुछ आवश्यक जिम्मेवारियां दी थीं। अपने पति की सहायता करना तथा परमेश्वर की सेवा अपने पति के साथ मिलकर करना और बहुत से ऐसे तरीके हैं जिनके द्वारा हम इन जिम्मेवारियों को निभा सकते हैं। हम यह देखना चाहते हैं कि बाइबल हमारे घरों में जिम्मेवारियों तथा कलीसिया में हमारे योगदान के विषय में क्या कहती है?

परिवार में मसीही स्त्री: बाइबल हमें बताती है कि स्त्री को अपने पति के आधीन रहना चाहिये। (देखिये 1 तीमुथियुस 2:11-14)। इस आधीनता का अर्थ यह नहीं होना चाहिये कि पत्नी को दु:खों से होकर गुजरना पड़े, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं या विश्वास करते

हैं। इफिसियों 5:22-33 से हमें पता चलता है कि पति को अपनी पत्नी से प्रेम करना चाहिये और इस प्रकार से प्रेम करना है जैसे यीशु ने अपनी कलीसिया से किया था- अर्थात उसने कलीसिया के लिये अपने प्राणों को भी दे दिया। एक पति जिस प्रकार से अपने शरीर की चिन्ता करता है उसी तरह से उसकी जिम्मेवारी है कि वह अपनी पत्नी की भी देखभाल करे। पत्नी को अपने पति का आदर करना चाहिये। यह एक बहुत सुन्दर रिश्ता है। इस रिश्ते की बुनियाद एक दूसरे के प्रति प्रेम पर आधारित है।

एक स्त्री को अपने घर को एक सुन्दर स्थान बनाने का पूरा प्रयत्न करना चाहिये। अपने घर को अच्छी तरह से साफ़-सुथरा रखकर हम ऐसा कर सकते हैं। अपने बच्चों को दयालु तथा एक नेक इन्सान बनने का प्रक्षिषण दें, तथा उन्हें यह सिखायें कि हर एक स्थिति में मसीही व्यावहार दिखायें (1 तीमु. 5:14)। पहुनाई करने (मेहमानों की देखभाल) में भी अपने पति की सहायता करनी चाहिये। परमेश्वर ने जो हमें आशीषें दी हैं उन्हें दूसरों के साथ बांटना चाहिये। इन बातों को करके हम अपने पतियों की सहायता कर सकते हैं ताकि वे कलीसिया में अच्छे अगुवे बन सकें। (1तीमु. 3:2-5, 11)।

यदि किसी स्त्री का पति मसीही नहीं है तो वह एक विशेष तरह से उसकी सहायता कर सकती है। यदि आप अपने पति के आधीन है तो आप अपने अच्छे मसीही व्यवहार से उसे प्रभु यीशु के पास ला सकती हैं। जिस प्रकार से पतरस ने कहा था, "हे पत्नियों, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। इसलिये कि यदि इनमें से कोई ऐसे हो जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाएं। (1 पतरस 3:1-2)।

हमारे शब्दों से अच्छा उदाहरण हमारा खुद का धार्मिक जीवन होता है।

आविवाहित स्त्रियों को भी अपनी जिम्मेवारियों को परिवार में समझना चाहिये। जब हम अपनी आशीषों को उनके साथ बांटते हैं, जो सुसमाचार को फैलाते हैं तो हम उन्हें यीशु मसीह के साथ बांटते हैं तथा हमें इसका प्रतिफल भी मिलेगा (मत्ती 10:40-42)। बहुत से ऐसे कार्य हैं जो स्त्रियां कर सकती हैं और जिनके लिये विवाहित होना आवश्यक नहीं है, जैसे कि, "जो भले काम में सुनाम रही हो, पाहुनों (घर पर आये मेहमानों) की सेवा की हो, पवित्र लोगों के पांव धोएं हो, दुखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो।" तथा जो नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित हो।" (1 पतरस 3:4)।

बाइबल बूढ़ी स्त्रियों के विषय में क्या कहती है? उनकी क्या-क्या जिम्मेवारियां हैं? कोई भी व्यक्ति कभी भी मसीही सेवा करने से रिटायर नहीं होता। परमेश्वर आप से हमेशा यह अपेक्षा करता है कि आप अपनी पूरी योग्यता से उसकी सेवा करें। बाइबल कहती है, "जो काम तुझे मिले उसे अपनी शक्ति भर करना" (सभोपदेशक 9:10)। बूढ़ी स्त्रियों को जवान स्त्रियों के सामने एक अच्छा उदाहरण रखना चाहिये। इस तरह से अपना जीवन बितायें ताकि जवान स्त्रियां आपका आदर करें, और आपकी अच्छाईयों को अपने जीवन में अपनायें, जबकि आप प्रभु यीशु को अपने जीवन का आदर्श बनाकर चलती है।

यदि आप एक अच्छा उदाहरण हैं, तो आप जवान स्त्रियों को यह सिखाने के योग्य हो सकेगी कि, "वे अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें। और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करने वाली भली और अपने-अपने पति के आधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न हो।" (तीतुस. 2:3-5)। जबकि आप आयु में बढ़ती हैं तब हमेशा गलतियों 6:9 को याद रखिये जहां लिखा है, "हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें क्योंकि यदि हम ढीले न हो तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।"

कलीसिया में मसीही स्त्रियों तथा बाइबल में सारे मसीहीयों, को कुछ शिक्षाएं दी गई है और वे हैं कलीसिया में उनके कार्य तथा उपासना के विषय में। इनमें से कुछ अज्ञाएं इस प्रकार से हैं: गीत गाना (इफि. 5:19), प्रार्थना करना (1थिस्स. 5:17-18), तथा हर्ष के साथ अपने चन्दे को देना (2 कुरि. 9:7)। स्त्रियों को यह भी आज्ञा दी गई है कि वे दूसरी स्त्रियों को सिखायें जैसे कि हमने पहिले भी तीतुस के 2 अध्याय में देखा था।

लेकिन कुछ कार्य ऐसे हैं जो कलीसिया में केवल पुरुषों को ही करने के लिये दिये गये हैं। जैसे कि ऐलडर (अध्यक्ष) तथा डीकन केवल पुरुष ही होते हैं।

बाइबल हमें बताती है कि यह कार्य केवल पुरुषों का हैं जो एक पत्नी के पति हैं। (1तीमु. 3:13; तीतुस 1:5-6)। कलीसिया की सभाओं में केवल पुरुषों को ही प्रचार करने तथा अगुवाई के लिये कहा गया है। जब मसीही पुरुष कलीसिया की सभा में उपस्थित हों, तब पुरुषों को सिखाने का और प्रचार करने का अधिकार दिया गया है तथा स्त्रियों को पूरी आधीनता के साथ सीखने के लिये कहा गया है, और पुरुष पर अधिकार चलाने के लिये मना किया गया है। "और स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता से सीखना चाहिए। और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।" (1तीमुथियुस 2:11-12)।

यह आवश्यक है कि मसीही स्त्रियां कलीसिया के कार्यों में भाग लें, परन्तु जैसा बाइबल में सिखाया गया है हम स्त्रियों को अपनी सीमा में रहकर कार्य करना है। सभा के बीच में खड़े होकर प्रचार करने का कार्य केवल पुरुषों का है।

क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर की योजना को लेकर चल रही है? क्या आप एक मसीही स्त्री है? क्या आप अपने परिवार में प्रभु को प्रसन्न कर रही हैं? क्या आप अपने जीवन की तुलना बाइबल में बताई गई मसीही स्त्रियों से कर सकती है, जो प्रत्येक बात में तथा आत्मिकता में परमेश्वर को प्रसन्न करें?

लोग क्या कहेंगे?

क्या इससे कोई विशेष फ़रक पड़ता है कि लोग हमारे बारे में क्या कहते हैं? इस जीवन में, मसीहीयों को अपने प्रभाव का हमेशा ध्यान रखना चाहिये। यदि हम ऐसे जीते हैं, जैसे परमेश्वर चाहता है, तब हममें दूसरों के प्रति दया, अच्छाई करने की भावना होगी। यह ऐसी विशेषताएं है जिनका अधिकतर लोग आंदर करते हैं। परमेश्वर की आज्ञा अनुसार जीवन बिताकर, हम उसकी महिमा और आदर करते हैं, तथा दूसरों के सामने एक अच्छा उदाहरण रखते हैं। अभी हाल ही में दो मसीही महिलाओं की मृत्यु हुई थी और उन दोनों ने मेरे जीवन पर एक बहुत बड़ा प्रभाव छोड़ा। मैं इनके उदाहरण के विषय में आपको कुछ बताना चाहुंगी।

जब मैं छोटी लड़की थी तथा अपनी आयु में बढ़ रही थी। तब सिस्टर वेल्टा ली हम जवान लड़कियों की बाइबल क्लास लेती थीं। वह हमारे प्रति बहुत अच्छी थीं- तथा पहुनाई करनेवाली थी अर्थात कभी भी जब हम उनके घर जाते थे तो वह हमारा स्वागत बड़ी प्रसन्नता से करती थीं। जब तक हमने गाड़ी चलानी नहीं सीखी थी, वह हमें अपने साथ घुमाने ले जाती थीं। वह हमेशा हमें उत्साहित करती थीं कि हम अपने अच्छे व्यवहार तथा चाल-चलन में अच्छी मसीही स्त्रियां बनें। वेल्टा ली एक बहुत अच्छी माता तथा पत्नी थी और हमारे लिये एक जीता-जागता उदाहरण थी। हमें ऐसा लगता था कि हम अपनी मां के साथ हैं? उनकी अपनी बेटी जॉयस मेरी बहुत अच्छी मित्र थी। वेल्टा ली अब इस संसार से चली गई हैं परन्तु उनका प्रभाव अभी भी उन सबके उपर स्थिर है जो उन्हें जानते थे। हम सब आज भी उनको बहुत याद करते हैं।

सन् 1973 में, मेरे पति रॉयस ने अपनी शिक्षा प्राप्त करके स्नातक की डिग्री प्राप्त की। हम मार्गन मिल टैक्सास में चले गये और वह

वहां एक प्रचारक का कार्य करने लगे। वहां एक महिला थी जो आयु में बड़ी थी तथा एक बहुत अच्छी मसीही थीं। उनका नाम था इलिज़ाबेथ डेविस। यह मसीही स्त्री महिलाओं को बाइबल की शिक्षा देती थीं।

बाइबल का उन्हें बहुत अच्छा ज्ञान था। वह हमेशा बाइबल के अच्छे पाठ तैयार करके हमें सिखाती थीं। मैंने उनसे परमेश्वर की इच्छा के विषय में बहुत कुछ सीखा है। वह बड़ी ही दयालु तथा उदारता दिखाने वाली महिला थी तथा बहुत बुद्धिमान भी थी और एक युवा प्रचारक की पत्नी के लिये एक साहस देने वाली स्त्री थी। उनका प्रभाव उनके परिवार में, चर्च में और समाज में एक लम्बे समय तक रहेगा।

अच्छे प्रभाव वाली ऐसी अनेकों स्त्रियां हैं जिनके विषय में बाइबल हमें बताती हैं। क्या आप इनमें से कुछ के पीछे चलने का प्रयास कर रही हैं?

1. मरियम, यीशु की माता- एक कुवांरी लड़की थी, बड़े ही नम्र स्वभाव की तथा विश्वास से भरी हुई थी। जिब्राइल स्वर्गदूत ने उसके विषय में कहा था "परमेश्वर के अनुग्रह से भरी हुई" (लूका 1:26-45)। प्रभु यीशु को बचपन से संभालने की जिम्मेवारी उसे दी गई थी। उसने यीशु की बहुत अच्छी परवरिश की थी।

2. दोरकास (तबीता)- यह स्त्री अपने अच्छे कार्यों तथा दान इत्यादि देने के लिये जानी जाती थी। जब उसकी मृत्यु हुई तब चेलों ने प्रेरित पतरस को बुलवा भेजा। जब वह वहां आया तब वहां पर विधवाएं उसकी मृत्यु से दु:खी होकर रो रही थीं, तथा उसके द्वारा बनाये हुए कपड़ों को एक दूसरे को दिखा रही थीं। परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा पतरस ने उसे जीवित कर दिया था। और यह बात सारे याफा में फैल गई, और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया। (प्रेरितों 9:42)।

3. प्रिसकिल्ला- अक्विला तथा प्रिसकिल्ला दोनों का व्यवहार पौलूस के प्रति बहुत अच्छा था। अपने घर में हमेशा वे उसका स्वागत करते थे। (प्रेरितों 18:2-3)। वे दोनों सुसमाचार के सिखानेवाले बन गये थे। (प्रेरितों 18:2-6)। कलीसिया उपासना करने के लिये उनके घर में मिलती थी। (1 कुरि. 16:19)।

4. मन्दिर में विधवा- इस स्त्री का नाम नहीं बताया गया है, परन्तु वास्तव में वह एक बहुत अद्भुत स्त्रिी थी। एक ऐसी स्त्री जो प्रभु के लिये अपना सब कुछ सौंपने को तैयार थी। उसमें बलिदान की भावना थी। मन्दिर के भण्डार में लोग बहुत बड़ी-बड़ी रकम डाल रहे थे, परन्तु इस विधवा ने दो दमड़ियां, जो एक अधेले के बराबर होती है उस भण्डार में डाली। (इन सिक्कों का दाम बहुत कम था)। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में उसका यह देना एक बहुत बड़ी बात थी। यीशु ने इन शब्दों में उसकी बढ़ाई की : "मैं तुम से सच कहता हूं कि मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है। क्योंकि सबने अपने धन की बढ़ती में से डाला है परन्तु इसने अपनी घटी में से डाला है, जो कुछ उसका था, अर्थात अपनी सारी जीविका उसने डाल दी (मरकुस 12:41-44)।

5. मारथा की बहिन मरियम- यीशु की मृत्यु का समय निकट आ रहा था तथा बैतनिय्याह के शमौन के घर में यीशु के लिये एक भोज की तैयारी की गई थी, जब वे खा रहे थे, तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामासी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई, और पात्र तोड़कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला। यह इत्र काफ़ी बहुमूल्य था इसलिये कुछ लोग आपस में रिसियाकर कहने लगे, इस इत्र को क्यों सत्यानाश किया गया? परन्तु यीशु ने कहा, "उसे छोड़ दो, उसे क्यों सताते हो? उसने तो मेरे साथ भलाई की है और जो उससे हो सकता था, उसने किया। उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में

पहिले से ही मेरी देह पर इत्र मला है। मैं तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं भी सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।" (मरकुस 14:3-9, देखें यहून्ना 12:1-8) प्रभु ने कहा "जो उससे हो सकता था, उसने किया।" परमेश्वर ने हमें कई प्रकार की योग्यताएं दी हैं। हम सबके पास एक जैसी योग्यताएं नहीं है, परन्तु कुछ न कुछ अच्छे कार्य तो हम कर ही सकते हैं।

आईये हम सब अपनी योग्यताओं को खोजें तथा इनको प्रभु की सेवा के लिये इस्तेमाल करें। शायद आप मेहमानों का आदर सत्कार बड़ी अच्छी तरह से करती है, आप शायद अच्छी तरह से सिखा सकती हैं, शायद आप गरीबों के लिये कपड़े सिल सकती है, और बच्चों का अच्छा पालन-पोषण कर सकती है तथा अपने पति की अच्छी तरह से देखभाल करती हैं। शायद आपके अन्दर नम्रता तथा पहुनाई करने की योग्यता है और आपने पूर्ण रूप से अपने आपको प्रभु को सौंप दिया है। आपको शायद खोज करके यह पता चले कि आप अच्छे मसीही लेख लिख सकती हैं और दूसरों का साहस बढ़ा सकती है। चाहे आपके पास कैसी भी योग्यतायें हों मैं आपसे आग्रह करूंगी कि उन्हें परमेश्वर के लिये इस्तेमाल करें, ताकि यीशु, आपके विषय में भी यह कह सके कि, "इससे जो हो सकता था, इसने किया।" जब आप यहां से संसार को छोड़कर चली जाएंगी तब आप क्या चाहेगी कि लोग आप को किस रूप में याद करें? सबसे बड़ी बात तो यह है कि लोग आपके विषय में क्या कहेंगे? जिस दिन न्याय का दिन होगा उस दिन प्रभु यीशु आप के विषय में क्या कहेगा?

परमेश्वर किस बात से प्रसन्न होता है?

मनुष्य जाति का इतिहास हमें बहुत से ऐसे उदाहरणों के विषय में बताता है जब लोगों ने परमेश्वर को प्रसन्न करने के बहुत से प्रयास किये थे। कुछ लोगों को इस बात में सफलता मिली थी परन्तु कुछ लोग उसे प्रसन्न करने में असफल रहे थे।

संसार की सृष्टि होने के पश्चात, दो भाईयों ने परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये उसे अपने-अपने बलिदान दिये। एक भाई जिसका नाम हाबिल था उसने अपने बलिदान से परमेश्वर को प्रसन्न किया, परन्तु दूसरे भाई के बलिदान से परमेश्वर प्रसन्न नहीं हुआ (उत्पत्ति 4:3-5)।

इसके कई वर्षों के पश्चात् परमेश्वर ने एक जल प्रलय भेज कर पृथ्वी पर लोगों को नष्ट कर दिया था, तथा एक धर्मी व्यक्ति नूह तथा उसका परिवार इस जल-प्रलय से बच पाये थे। नूह ने परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन बिताया था। (उत्पत्ति 6:7-8)।

इस्त्राएलियों का राजा शाऊल जिसने युद्ध करके अमालेकियों को हराया था जो परमेश्वर के शत्रु थे। परन्तु शाऊल तथा उसकी सेना ने अमालेकियो के अच्छे-अच्छे पशुओं को रख लिया यह सोचकर कि इन्हें हम परमेश्वर को बलिदान करके चढ़ायेगें। लेकिन परमेश्वर इस बलिदान से इतना अप्रसन्न हुआ कि उसने शाऊल के हाथ से राज्य वापस ले लिया। (1 शमुएल 15:28)।

राजा दाऊद के राज्यकाल में, परमेश्वर का सन्दूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर टीले पर रहने वाले अबीनादाब के घर से निकाला और गाड़ी हांकने वालों में से एक ने जिसका नाम उज्जा था अपना हाथ परमेश्वर के सन्दूक की ओर बढ़ाकर उसे थाम लिया क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी। परन्तु परमेश्वर इससे अप्रसन्न हुआ और उसका

कोप उज्जा पर भड़का, और परमेश्वर ने उसके दोष के कारण उसको वहां ऐसा मारा, कि वह वहां परमेश्वर के सन्दूक के पास मर गया। (2 शमुएल 6:3-7)।

यीशु ने जब पृथ्वी पर कलीसिया (चर्च) की स्थापना कर दी, तब उसकी कलीसिया के लोग आपस में मिलकर रहने लगे, और उनकी वस्तुएं आपस में सांझे की थी तथा जिनके पास जमीन-ज़यदाद थी वो उसे बेचकर उससे मिलने वाले पैसे को प्रेरितों को दे देते थे ताकि जिसे जैसी आवश्यकता हो उसे दे दिया जाये। एक पति पत्नी ने भी जिनका नाम हनन्याह और सफ़ीरा था कुछ भूमि बेची परन्तु उसके दाम में से कुछ अपने पास रख लिया और इस बात से परमेश्वर बहुत अप्रसन्न हुआ। जब उन्होंने एक भाग लाकर प्रेरितों के पावों के आगे रख दिया तब प्रेरित पतरस यह जान गया कि उन दोनों ने प्रेरितों से झूठ बोला है और दोनों वहीं प्रेरितों के सामने मर गये। (प्रेरितों 4:34; 5:10)।

अभी जबकि मसीह की कलीसिया की शुरूआत ही हुई थी, कुछ यहूदी लोग मसीहीयों को सताने लगे। इनमें से एक यहुदी का नाम शाऊल था जो कि तरसुस शहर का रहने वाला था। वह लोगों के घरों में घुसकर उन्हें पकड़कर जेलखाने में डलवा देता था (प्रेरितों 8:3)। वह ऐसा विश्वास करता था कि यह सब वह परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये कर रहा है या उसकी इच्छा को पूरा कर रहा है। परन्तु प्रभु यीशु ने शाऊल से सीधे बात की और उससे कहा कि वह अपने मार्ग को बदले तथा मसीहियों को सताना बन्द करे। हम पढ़ते हैं कि तीन दिन तक शाऊल अन्धा रहा (प्रेरितों 9:1-9)।

जब इन उदाहरणों को हम देखते हैं, तब हम यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि क्या यह जानना सम्भव है कि परमेश्वर को किस प्रकार से प्रसन्न किया जा सकता है? हम शायद अपने इन्सानी दिमाग़ से ऐसा विचार करें या सोचें कि परमेश्वर को इन लोगों से

प्रसन्न होना चाहिए था। शायद इन लोगों ने भी ऐसा ही सोचा होगा कि उनसे परमेश्वर प्रसन्न होगा। परन्तु हम किस प्रकार से जान सकते हैं कि परमेश्वर कैसे प्रसन्न होगा?

हम जानते हैं कि जब हम, परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं तब हम उसे प्रसन्न करते हैं। (यिर्मयाह 7:23; 1 शमुएल 15:22; प्रेरितों 5:29)। इस बात को ध्यान में रखकर आईये कुछ उदाहरणों को फिर से देखें: हाबिल के बलिदान से परमेश्वर इसलिये प्रसन्न हुआ क्योंकि यह उसकी आज्ञा अनुसार दिया गया था। यह विश्वास के द्वारा चढ़ाया गया बलिदान था। (इब्रानियों 11:4), और विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है। (रोमियों 10:17)।

नूह तथा उसका परिवार जल प्रलय से इसलिये बच पाये क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को माना था। परमेश्वर की इच्छा अनुसार नूह ने अपने और अपने परिवार के लिये पानी का जहाज़ बनाया था (इब्रानियों 11:7)।

राजा शाऊल ने अमालेकियों के यहां से अच्छे-अच्छे पशुओं को लाकर परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा। परमेश्वर ने शाऊल को साफ़-साफ़ बता दिया था, वहां जाकर सब कुछ नाश कर देना परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। (1 शमुएल 15:3)।

जब उज्जा ने अपना हाथ परमेश्वर के सन्दूक की ओर बढ़ाया, तब वह उसकी आज्ञा का उल्लंघन कर रहा था। उज्जा उन लोगों में से नहीं था जिन्हें परमेश्वर के सन्दूक को उठाने का अधिकार दिया गया था और परमेश्वर ने उस सन्दूक को छूने तक के लिये भी मना किया था। (गिनती 4:15; 2 शमुएल 6:6-7)।

हनन्याह और सफ़ीरा ने प्रभु द्वारा दी गई सज़ा से प्राणों को छोड़ दिया और वे मर गए इसलिये नहीं क्योंकि उन्होंने भूमि बेचकर उस पैसे से आवश्यकता से पीड़ित लोगों की सहायता करनी चाही थी, परन्तु वे प्रभु द्वारा इसलिये दण्डित किये गये क्योंकि उन्होंने झूठ

बोला था, और उनका झूठ यह था कि सारी भूमि बेचकर सारा पैसा वे नहीं दे रहे थे। उन्होंने उसमें से कुछ पैसा अपने लिये रख लिया था। (नीतिवचन 6:16-19; लूका 18:20; मत्ती 12:37)।

जब तरसुस के शाऊल को पता चला कि वह परमेश्वर की इच्छा का पालन नहीं कर रहा है तो उसने तुरन्त अपने जीवन को बदला तथा परमेश्वर की आज्ञा को मानने लगा। अपना सारा जीवन उसने प्रभु की सेवा में लगा दिया। (प्रेरितों 9:1-30; 2 तीमु. 4:6-8)।

अनेकों लोग परमेश्वर को प्रसन्न तो करना चाहते हैं, परन्तु इस बात का बाइबल से अध्ययन नहीं करते कि वह किस बात से प्रसन्न होगा। जो उन्हें अच्छा लगता है, उससे वे परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं। परमेश्वर के लिये उनके अन्दर जोश तो है, परन्तु बिना किसी ज्ञान के। "क्योंकि ऐसे लोग परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, और अपनी धार्मिकता स्थापन करने का यत्न करके परमेश्वर की धार्मिकता के आधीन न हुए।" (रोमियों 10:2-3)। आईये परमेश्वर के वचन बाइबल का अध्ययन करें और सीखें कि परमेश्वर को किस प्रकार से प्रसन्न किया जा सकता है।

हम परमेश्वर को उसकी आज्ञाएं मानकर प्रसन्न कर सकते हैं। उसने अपने वचन में कहा है कि, उद्धार पाने के लिये हमें उसमें विश्वास करना है तथा बपतिस्मा लेना हैं (मरकुस 16:16); हमें अपने पापों से मन फिराना है। (लूका 13:3; प्रेरितों 2:38)। यदि हम उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते तो हम उसे प्रसन्न नहीं कर रहे हैं। यीशु ने कहा था, "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" (यूहन्ना 14:15)। क्या आज आप अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न कर रही हैं?

ऐसी स्त्री जो प्रशंसा के योग्य है

अधिकतर स्त्रियों की ऐसी इच्छा होती है कि दूसरे उनकी प्रशंसा करें। यह हमारे मनुष्य स्वभाव का एक भाग है। कुछ स्त्रियां सुन्दर दिखने के लिये महंगे वस्त्र तथा गहने इत्यादि खरीदती है। कई ऐसी भी हैं जो सजने तथा संवरने में कई प्रकार की क्रीम तथा लोशन लगाती हैं। कई अपने बालों को संवारने के लिये कई घंटे लगाती है। कुछ अपने घर को सुन्दर बनाने तथा सजाने में बहुत समय बिताती है। कुछ ऐसी स्त्रियां भी हैं जो बढ़िया से बढ़िया खाना बनाती है, और इन सब बातों से उन स्त्रियों को प्रशंसा मिलती है, परन्तु प्रश्न यह है कि इन सबसे क्या परमेश्वर की ओर से हमें प्रशंसा मिलेगी? बाइबल हमें बताती है कि हमें किस प्रकार से अपने को इस योग्य बनाना है ताकि परमेश्वर की ओर से हमें प्रशंसा मिले। आईये इनमें से कुछ बातों के विषय में देखें:

बाइबल उन स्त्रियों के विषय में भी बताती है जो अपनी बाहरी सुन्दरता पर अधिक ध्यान देती है। प्रेरित पतरस इस प्रकार से लिखते हुए कहता है: "और तुम्हारा सिंगार दिखावटी न हो, अर्थात बाल गूंथने और सोने के गहने, या भांति-भांति के कपड़े पहिनना। वरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। (1 पतरस 3:3-5)। परमेश्वर यह चाहता है कि स्त्रियां स्वभाव में नम्र हो और उसके सम्मुख इसका बहुत बड़ा महत्व है। यह बात सुहावने कपड़ों, गहने तथा अलग-अलग स्टाईल के बालों को बनाने से बहुत अधिक महत्व रखती है। हमारी व्यक्तिगत सुन्दरता देखकर परमेश्वर हमारी बढ़ाई नहीं करेगा बल्कि एक सुन्दर मन रखने से परमेश्वर की प्रशंसा हमें मिलती है। जब

परमेश्वर ने इस्त्राएलियों के लिये राजा चुना था, उसने शमुएल भविष्यदूक्ता से यह बात कहीं थी: कि "न तो उसके रूप पर दृष्टि कर और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है, क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है, मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है। (1 शमुएल 16:7)।

परमेश्वर सुन्दर घर तथा बढ़िया खाने की प्रशंसा नहीं करता बल्कि जीवन में और भी कई ऐसी महत्त्वपूर्ण बातें हैं जिनसे वह प्रसन्न होता है। जब यीशु इस पृथ्वी पर रहता था, वह एक स्त्री के यहां प्रवचन देने जाता था जिसका नाम था मारथा। मारथा यीशु और मेहमानों की सेवा टहल कर रही थी लेकिन यीशु की बातों को भी ध्यान से सुन रही थी तथा उसकी बातें सुनने से रूक नहीं रही थी। उसकी बहिन मरियम यीशु की बातों को सुन रही थी, परन्तु मारथा कहने लगी कि यीशु को मरियम को बोलना चाहिये कि वह काम में मेरा हाथ बटाये। यीशु ने उससे कहा, "मार्था, हे मार्था, तू बहुत-बहुत बातों के लिये चिन्ता करती है और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तम, भाग को मरियम ने चुन लिया है, जो उससे छीना न जाएगा (लूका 10:41-42)। परमेश्वर चाहता है कि हम आत्मिक बातों को सबसे, अधिक महत्व दें (मत्ती 6:33)।

सुन्दर कपड़े पहिनने में कोई बुराई नहीं है, अपने घर को सुन्दर बनाना और सजाना भी कोई ग़लत बात नहीं है। परमेश्वर चाहता है कि हम अपने घर-परिवार का ध्यान रखें तथा अपने आपको भी अच्छी तरह से संवारे और सुन्दर दिखें। और इन्हीं बातों के विषय में नीतिवचन के 31:10-27 में ज़ोर देकर कहा गया है। परन्तु इन बातों को करने का कारण यह कतई नहीं है कि हमें मनुष्यों की प्रशंसा चाहिये। परन्तु हमारे अच्छे जीवन का कारण यह होना चाहिये ताकि

दूसरे लोग हमारे अच्छे जीवन को देखकर परमेश्वर की ओर फिरें तथा हमारे अच्छे धार्मिक जीवनों के द्वारा प्रभु की महिमा हो। यीशु ने मत्ती 5:16 में कहा था, "उसी प्रकार से तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं बढ़ाई करे।" नीतिवचन का लेखक कहता है, "शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।" (नीतिवचन 31:30)। बाइबल हमें शिक्षा देती है कि शारीरिक सुन्दरता से बढ़कर मन की सुन्दरता आवश्यक है। इसलिये नीतिवचन का बुद्धिमान प्रचारक कहता है कि, "सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है" (नीतिवचन 4:23)। दाऊद की तरह आप भी कह सकती है, हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर" (भजन 51:10)।

सारा का विश्वास

बाइबल हमें अनेकों पुरुषों और स्त्रियों के विषय में बताती है, जिन्होंने अपने अच्छे जीवन के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न किया था। हमें इनके उदाहरणों से सीखना चाहिये ताकि हम भी अपने जीवनों से उसे प्रसन्न कर सकें। सबसे पहिला कदम जो परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये होना चाहिये वो है अपने विश्वास में आगे बढ़ना। बाइबल में इब्रानियों का लेखक कहता है, "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है, और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। (इब्रानियों 11:6)। परमेश्वर में जो हमारा विश्वास है उसमें क्या-क्या शामिल होना चाहिये? आईये बाइबल की उस महान स्त्री के विषय में देखें जिसका विश्वास बहुत शक्तिशाली था।

सारा का विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में था। परमेश्वर ने इब्राहिम तथा सारा से यह प्रतिज्ञा की थी कि उनके यहां एक पुत्र का जन्म होगा, तथा उससे वह एक बड़ी जाति बनाएगा और भूमण्डल के सारे कुल उसके द्वारा आशिष पाएंगे (उत्पत्ति 12:3)। जैसे-जैसे समय बीतता गया, सारा बूढ़ी और बांझ थी, परन्तु परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा फिर से दोहराई और कहा कि, उनके पास एक पुत्र उत्पन्न होगा। (उत्पत्ति 18:10)। क्योंकि सारा इस समय बूढ़ी थी इसलिये जब उसने पुत्र के जन्म के विषय में सुना तो वह अपने आप में हंसी। परन्तु परमेश्वर ने कहा, "क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है?" (उत्पत्ति 18:14)। जैसे परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी ठीक वैसे ही उनके यहां इसहाक का जन्म हुआ। (उत्पत्ति 21:2)। इब्रानियों 11:11 में हम पढ़ते हैं कि, "विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई, क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करने वाले को सच्चा जाना था।"

अपने लिखित वचन बाइबल के द्वारा परमेश्वर ने हमसे कई प्रतिज्ञाएं की हैं। पुराने नियम के कई पद हमें प्रभु यीशु मसीह के आने के विषय में बताते हैं। प्रभु यीशु मसीह सारा और इब्राहीम के वंश से था जो सारे धार्मिक संसार के लिये एक आशीष का कारण बना। परमेश्वर ने उस प्रतिज्ञा को तब पूरा किया जब यीशु ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया ताकि वह एक सिद्ध मनुष्य का जीवन व्यतित करके सारे संसार के पापों के लिये एक सिद्ध बलिदान दे सके। अब परमेश्वर हमसे प्रतिज्ञा करता है, अर्थात उनसे जो लोग मसीही युग में रहते हैं, उनके लिये पापों की क्षमा तथा अनन्त जीवन है। यह प्रतिज्ञाएं कुछ शर्तों पर आधारित है अर्थात हमें यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है तथा उसकी आज्ञा को मानना है, उसने कहा था "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा (मरकुस 16:16)। सारा के विश्वास पर परमेश्वर ने जो उससे प्रतिज्ञा की थी उसने उसे पूरा किया। यदि हमारा विश्वास सच्चा है तो परमेश्वर ने हमसे जो प्रतिज्ञा की है उसे वह पूरा करेगा। आज संसार में सब तरफ़ अविश्वास के बीज बोये जा रहे हैं। परन्तु आप उस महान परमेश्वर की बनाई हुई एक सुन्दर रचना हैं। यह अपने आप में एक बहुत बड़ा प्रमाण है। आपके अन्दर जो आत्मिक भूख और विश्वास है वो दूसरे प्राणियों में नहीं है। इस सब को मध्यनज़र रखते हुए आपका विश्वास परमेश्वर में प्रतिदिन और दृण होना चाहिए।

रिबका, इसहाक के लिये परमेश्वर का चुनाव

सारे संसार में प्रतिदिन, हजारों लोग अपने लिये विवाह का चुनाव करते हैं। जीवन साथी चुनने के लिये तमाम संसार में विभिन्न प्रकार के रीति रिवाज़ों पर लोग चलते हैं। शायद किसी समाज में लोग कुछ विशेष बातों को मानते हो, परन्तु यह भी हो सकता है कि दूसरे समाजों में शायद उन बातों को महत्व नहीं दिया जाता। क्या आपने कभी यह सोचने का प्रयत्न किया है कि परमेश्वर को इस विषय में कौन-सी बातें पसन्द हैं? पुराने नियम में उत्पत्ति नामक पुस्तक हमें बताती है कि परमेश्वर ने इसहाक के लिये एक पत्नी का चुनाव किया था।

इस घटना का वर्णन हमें उत्पत्ति के 24 अध्याय में मिलता है। जिस व्यक्ति को पत्नी की आवश्यकता थी उसका नाम था इसहाक जो इब्राहिम का बेटा था। इब्राहिम जब 140 वर्ष का था तब उसने अपने एक भरोसेमन्द दास को इसहाक के लिये पत्नी तलाश करने को भेजा। अब्राहम ने अपने दास से कहा, "परन्तु तू मेरे देश में मेरे ही कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र इसहाक के लिये एक पत्नी ले आएगा.... स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जिसने मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्म-भूमि से ले आकर मुझ से शपथ खाई और कहा कि मैं यह देश तेरे वंश को दूंगा, वही अपना दूत तेरे आगे-आगे भेजेगा कि तू मेरे पुत्र के लिये वहां से एक स्त्री ले आए।" (उत्पत्ति 24:4, 7)।

उसके दास ने इस बात को बड़ी गम्भीरतापूर्वक लिया। जब वह नाहोर शहर पहुंचा, उसने परमेश्वर से अपनी अगुवाई के लिये प्रार्थना

की तथा इस बात की कामना की कि परमेश्वर उससे क्या चाहता है। "देख मैं जल के इस सोते के पास खड़ा हूं, और नगरवासियों की बेटियां जल भरने के लिये निकल जाती है: इसलिये ऐसा होने दे कि जिस कन्या से मैं कहूं, अपना घड़ा मेरी ओर झुका कि मैं पिऊं, और वह कहे, ले पी ले, पीछे मैं तेरे ऊंठों को भी पिलाऊंगी, यह वही हो जिसे तू ने अपने दास इसहाक के लिये ठहराया हो, इसी रीति से मैं जान लूंगा कि तू ने मेरे स्वामी पर करूणा की है।" (13-14)। इससे पहिले कि वो दास अपनी बात को समाप्त करता, रिबका जो अब्राहम के भाई की पोती थी, कुंए के पास आई जिस प्रकार से दास ने प्रार्थना की थी उसने वैसे ही किया। वो दास इस बात को जान गया कि रिबका ही वो लड़की है जिसे परमेश्वर ने इसहाक की पत्नी होने के लिये चुना है। आईये अब रिबका के चरित्र को देखें, यह जानने के लिये कि किस प्रकार की लड़की को परमेश्वर ने चुना था? सबसे पहिले, हम यह देखते हैं कि रिबका ऐसे परिवार से थी जो केवल एक परमेश्वर में विश्वास करता था (पद 50-51)। यही कारण हो सकता है कि अब्राहम ने अपने दास को वहां भेजा ताकि वह उसके ही अपने लोगों में से उसके पुत्र के लिये पत्नी चुने। आज, यदि एक मसीही लड़का या लड़की अपने लिये जीवन साथी की तलाश करते हैं तो उनके लिये यह बहुत आवश्यक है कि वें एक मसीही (christian) को अपना जीवन साथी चुने और ऐसे व्यक्ति को चुने जिसका विश्वास एक जीवते परमेश्वर मे हो, एक ऐसा इन्सान जो आपकी स्वर्ग में जाने में सहायता कर सके, तथा ऐसा जीवन साथी जो आपके ध्यान को जीवते परमेश्वर से दूर न ले जाये। यदि चुनाव आपका अपना है तब आपको एक ऐसे साथी को चुनना है जो आत्मिक बातों मे रुचि रखता हो तथा आप दोनों का विश्वास एक हो। (1 कुरि. 9:5)।

दूसरी बात यह है कि रिबका का चरित्र पवित्र था। 16 पद में लिखा है कि "वह कुंवारी थी, और किसी पुरुष से उसका कोई सम्बंध नहीं था" अपने विवाह से पहिले उसने अपने जीवन को पवित्र तथा साफ़, सुथरा रखा हुआ था। आज परमेश्वर प्रत्येक मसीही लड़की से भी यही चाहता है। इब्रानियों 13:4 से हम सीखते हैं, "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए और बिछौना निष्कलंक रहे क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।" परमेश्वर दो जनों अर्थात लड़के और लड़की के बीच शारीरिक सम्बंध को मान्यता तब देता है जब दोनों का विवाह हुआ है। अर्थात पति-पत्नी के रूप में।

तीसरी बात, हम यह देखते हैं कि रिबका आदर-सत्कार करने में बहुत बढ़कर थी। रिबका सुस्त लड़की नहीं थी। यद्यपि उसके परिवार में बहुत से नौकर थे (पद 59-61), तौ भी उसने यह कभी नहीं चाहा कि उसके दास या घर के नौकर सारा काम करें। जब रिबका अब्राहम के दास से मिली तब वह पानी से भरा हुआ घड़ा लेकर कुंए से लौट रही थी। दास को पानी देने के पश्चात उसने कहा, "मैं तेरे ऊंटों के लिये भी तब तक पानी भर लाऊंगी, जब तक वे पी न चुके।" (उत्पत्ति 24:19)। दस ऊंटों के लिये कुंए से पानी भर कर लाना कोई सरल कार्य नहीं था। जब अब्राहम के दास ने उससे कहा कि क्या वे उसके परिवार के यहां आज रात ठहर सकते हैं, इस पर उसने कोई हिचाकचाहट नहीं दिखाई बल्कि कहा कि हमारे यहां ठहरने के लिये बहुत स्वागत है तथा उसके ऊंटों के लिये भी काफ़ी भोजन उपलब्ध है। तब रिबका दौड़कर गई ताकि अपने परिवार वालों को यह सब बातें बताएं। पत्नियों के पास बहुत से कार्य करने के लिये होते है। प्रेरित पौलूस बूढ़ी स्त्रियों से कहता है, "वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहे कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति

रखें। और संयमी, पतिव्रता, घर का कारोबार करने वाली, भली और अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हो, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाएं।" (तीतुस 2:4-5)। इसहाक के लिये परमेश्वर ने एक ऐसी स्त्री को चुना था जो अपने घर में मेहमानों का आदर-सत्कार करने में थकती नहीं थी। बड़ी ही प्रसन्नता के साथ वह अतीथियों का स्वागत करती थी।

यदि आप भी परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहती हैं तथा यह चाहती है कि आपका पति आपसे प्रसन्न हो तो आप भी रिबका के उदाहरण को अपने जीवन में लेकर चलें।

(1) अपने पति की आत्मिक रूप से बढ़ने में सहायता कीजिये यह दिखाकर कि आप सच्चे जीवते परमेश्वर की सेवा करती है।

(2) अपने विवाह के लिये अपने को पवित्र बनाकर रखें।

(3) अतीथियों का स्वागत करें, प्रसन्नता के साथ दूसरों की सहायता करें, सुस्त न बनें। क्या आप में रिबका जैसी विशेषताएं हैं?

परमेश्वर की सहायता

पुराना नियम बहुत से ऐसे उदाहरणों से भरा हुआ है जब परमेश्वर ने विश्वासी पुरुषों तथा स्त्रियों की कठिन समय में सहायता की थी। नये नियम में हमें यह बताया गया है कि हम उनके उदाहरणों से सीखें। (रोमियों 15:4)। आईये अब योकेबेद के विषय में देखें तथा उसके विश्वास से अपने लिये कुछ पाठ सीखें।

योकेबेद को पूरा भरोसा था कि परमेश्वर कठिन समय में उसकी सहायता करेगा। वह यह जानती थी कि परमेश्वर अपने विश्वासी लोगों की सदा सहायता करता है। योकेबेद मूसा की मां थी, जिसने इस्त्राएल जाति को मिस्त्र के दासत्व से स्वतंत्र कराने में अगुवाई की थी। (निर्गमन 6:20)। मूसा के जन्म के समय एक बहुत भयानक नियम निकाला गया था: फ़िरौन जो (मिस्त्र का शासक था), उसने यह आज्ञा निकाली कि, "इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हो उन सब को तुम नील नदी में डाल देना, और सब बेटियों को जीवित रहने देना" (निर्गमन 1:22)। परन्तु मूसा की माता ने उसे मिस्त्रियों से छिपाकर तीन महीने तक अपने घर में रखा। जब बहुत समय तक वह उसे छिपा न सकी, तब उसने उसे एक टोकरी में रखकर नदी के किनारे पर छोड़ दिया। जब फ़िरौन की बेटी नदी पर नहाने के लिये आई, उसने मूसा को वहां पड़े हुए देखा। छोटे से सुन्दर बच्चे को देखकर और यह देखकर की वह रो रहा है, उसको उस पर दया आई। (निर्गमन 2:6)। उस समय से लेकर तथा जब तक वह बड़ा हुआ वह फ़िरौन की बेटी की निगरानी में रहा अर्थात उसने उसे पाला पोसा। फ़िरौन के लोग मूसा को कोई भी हानि पहुंचाने से डरते थे। हम इब्रानियों 11:23 से सीखते हैं कि विश्वास के द्वारा ही मूसा के माता-पिता ने उसे तीन महीने तक छिपा कर रखा। क्योंकि वे जानते

थे कि बालक सुन्दर है, तथा वे राजा की आज्ञा से न डरे। उनका परमेश्वर में पूर्ण विश्वास था कि वह इस बच्चे की रक्षा करेगा।

मसीही लोगों को भी आज परमेश्वर में अपना पूरा विश्वास रखना चाहिये। वे परमेश्वर पर पूर्ण रूप से निर्भर कर सकते हैं कि कठिन समय में वह उनकी सहायता करेगा। उसका पुत्र प्रभु यीशु हमसे कहता है, "इसलिये पहिले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज़ करो तो यह सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती 6:33)। पिछली आयतों में वह बताता है कि वह किन वस्तुओं के विषय में बात कर रहा है। वह कहता है कि हमें खाने, पीने और पहिनने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को जानता है और वह उन्हें प्राप्त करने में हमारी सहायता करेगा। कई बार हो सकता है कि हमारे साथ बहुत बुरी घटना घटे; परन्तु परमेश्वर जानता है कि हमारे लिये उससे अच्छाई कैसे उत्पन्न हो। रोमियों 8:28 में प्रेरित पौलूस लिखते हुए कहता है, "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। इस बात पर ध्यान दीजिये कि इन दोनों पदों में परमेश्वर हमसे कुछ अपेक्षा करता है अर्थात वह हम से कुछ चाहता है। यदि हम उसके राज्य की खोज करते हैं, तथा उसके राज्य (कलीसिया) में "बुलाए हुए लोग हैं" तब हम ऐसी आशा कर सकते हैं कि वह हर पल हमारी सहायता करेगा तथा हमारे परिवारों को आशीषित करेगा।

योकेबेद का उदाहरण आज की स्त्रियों को शिक्षा देता है कि हमें परमेश्वर में अपना पूरा भरोसा रखना चाहिए।

एक सामरी स्त्री का प्रभाव
(यूहन्ना 4:1-43)

हम में से प्रत्येक व्यक्ति दूसरों पर किसी न किसी रूप में प्रभाव छोड़ता है। कुछ लोग, क्योंकि वे काफ़ी प्रसिद्ध हैं, या संसार में उनका बड़ा नाम हैं, इस कारण शायद दूसरों पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सीधे उन लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं जिन्हें वे केवल व्यक्तिगत रूप से जानते हैं। परन्तु जब हम इस विषय पर सोचते हैं कि प्रत्येक जन दूसरों के जीवन से प्रभावित होता है, तब हम शायद यह कह सकते हैं कि जान पहचान से अधिक हमारा प्रभाव दूसरों पर तेज़ी से फैलता है। उदाहरण के लिये, मैं ये कह सकती हूं कि मेरा प्रभाव मेरी बेटी पर जो मैंने छोड़ा है वो उन दूसरे लोगों पर किस प्रकार से पड़ेगा जिन्हें मैं कभी नहीं मिली। जिस प्रकार का प्रभाव मैंने अपनी बेटी पर छोड़ा है, शायद वैसा ही प्रभाव, चाहे वो बुरा हो या अच्छा, वह अपने ससुराल के लोगों पर भी छोड़ें। क्योंकि यह बात बिल्कुल सच और खरी है, इसलिये मुझे बड़ा सावधान रहना चाहिए कि मेरा व्यवहार कैसा है।

यीशु जब यहुदिया को छोड़कर गलील को जा रहा था तब उसे सामरिया नामक स्थान से होकर गुज़रना था। तब उसने एक कुंआ देखा और आराम करने के लिये वह वहां रूक गया, और उसके चेले जो उसके साथ थे बाज़ार से भोजन लेने के लिये चले गये। जब वह उनके आने की बाट जोह रहा था तब एक स्त्री उसी घड़ी जल भरने के लिये कुंए पर आई। यीशु ने उस स्त्री से पानी पीने के लिये मांगा। इस बात से उसे बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि यहुदी और सामरी अक्सर एक दूसरे से बातचीत नहीं किया करते थे। इस स्त्री ने यीशु पर एक अच्छा प्रभाव छोड़ा और थोड़ी सी बातचीत के बीच, उसने

यीशु से कहा, "सर, मुझे ऐसा लग रहा है कि आप एक भविष्यदूक्ता है" परन्तु यीशु उससे अराधना के विषय में बात करने लगा और तब यीशु ने उससे एक और बात कही कि जिस स्थान पर आराधना होगी उसका इतना महत्व नहीं होगा क्योंकि, "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।" परमेश्वर की उपासना किन्हीं रीतिरिवाज़ों पर आधारित नहीं होती बल्कि सच्चे मन और पूरी आस्था के साथ की जाती है। (यूहन्ना 4:24)। उसने उस स्त्री से कहा कि "मैं वही हूं" अर्थात मसायाह (मुक्तिदाता), जिसका लोग इन्तज़ार कर रहे हैं। परमेश्वर की सच्ची उपासना तब होती है जब आत्मा और सच्चाई से की जाती है।

परमेश्वर "आत्मा" है इसलिये "अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें"। सच्ची उपासना के द्वारा मनुष्य की सहभागिता अपने सृष्टिकर्ता से होती हैं। सामरी स्त्री ने यीशु की बातों पर विश्वास करके उसे अपने जीवन में अपनाया और ऐसा करके उसने अपने आसपास के लोगों पर एक अच्छा प्रभाव छोड़ा।

प्रिसकिल्ला-यीशु मसीह में एक सहायक

बाइबल में महान स्त्रियों का अध्ययन करके हम सीखते हैं कि किस प्रकार से उन्होंने परमेश्वर की सेवा की थी तथा हम भी ऐसा ही कर सकते हैं। आईये इस विषय पर प्रिसकिल्ला के उदाहरण को देखें।

जब प्रेरित पौलूस प्रचार के लिये यात्राएं किया करता था, तब उसकी मुलाकात कुरिन्थुस में एक स्त्री और पुरुष से हुई जिनका नाम था अक्विला और प्रिसकिल्ला। इस स्त्री ने पौलूस का काफ़ी अतिथि सत्कार किया था, उसने उसे अपने घर में ठहराया तथा पौलूस उनके घर में लोगों को वचन का प्रचार किया करता था। वह तथा उसका पति पैसे से भी पौलूस की सहायता किया करते थे, वे सब मिलकर तम्बू बनाने का कार्य किया करते थे। (प्रेरितों 18:1-3)।

बाद में प्रिसकिल्ला तथा उसके पति ने पौलूस के साथ मिलकर इफिसुस की यात्रा की। थोड़े समय पश्चात पौलूस ने उन्हें इफिसुस में छोड़ दिया तथा खुद यरूशलेम को चला गया। जब अक्विला और प्रिसकिल्ला इफिसुस में थे तब उनकी मुलाकात एक बहुत अच्छे और धार्मिक, साहसी व्यक्ति से हुई जिसका नाम अप्पुलोस था। अप्पुलौस लोगों को सिखा तो रहा था परन्तु, "वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात करता था।" जब अक्विला और प्रिसकिला ने उसे सिखाते हुए सुना तो उन्होंने उसे प्रभु के मार्ग के विषय में और अच्छी तरह से समझाया। इनके सिखाने के पश्चात अप्पुलोस लोगों को सिखाने तथा समझाने में यह निश्चय दिला सका कि "यीशु ही मसीह है और बड़ी प्रबलता से वह यहुदियों को सब के सामने निरूत्तर करता रहा।" (प्रेरितों 18:28)।

कुछ समय पश्चात हम देखते हैं कि यह दोनों पति-पत्नि रोम में जाकर रहने लगते है। प्रेरित पौलूस उन्हें कुरिन्थुस से पत्र लिखकर

अपना अभिवादन भेजता है और उन्हें कहता है, "जो मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी है।" (प्रेरितों 16:3)। हम यहां यह भी पढ़ते हैं कि कुछ समय पहिले उन्होंने उसकी जान भी बचाई थी तथा उसे बचाने के लिये अपने जीवन को जोखिम में डाल दिया था। इसलिये केवल पौलूस ही नहीं बल्कि सारी कलीसियां उनकी धन्यवादी थी। (रोमियों 16:4)।

हम मसीही स्त्रियों को आज प्रिसकिल्ला के उदाहरण से यह सीखना चाहिए कि वह कितनी अतिथि सत्कार करने वाली तथा खुले मन की स्त्री थी। और परमेश्वर के वचन को सिखाने में निपुण थी परन्तु उसने कभी भी कलीसिया के बीच में खड़े होकर प्रचार नहीं किया क्योंकि बाइबल की शिक्षा है कि, "स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें..." (1 कुरि. 14:34)। आवश्यकता पड़ने पर उसने अपनी सेवाओं को सु-इच्छा से दिया। परमेश्वर की यह इच्छा है कि प्रत्येक मसीही स्त्री अपने जीवन के द्वारा जो भी सेवा प्रभु को दे सकती है उसे प्रसन्नता के साथ दे।

परमेश्वर के वचन को सिखाना एक बहुत आवश्यक कार्य है। दूसरों को परमेश्वर तथा उसके वचन को बताने से एक बहुत बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। प्रिसकिल्ला की तरह हम भी वचन को सिखा सकते हैं परन्तु कलीसिया के बीच में खड़े होकर नहीं "क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है" (1 कुरि. 14:35)।

लुदिया - एक अच्छा उदाहरण

प्रेरितों के नाम की पुस्तक के सोहलवें अध्याय में हम एक स्त्री के विषय में पढ़ते हैं जिसका नाम लुदिया था। आईये उसके उदाहरण से तीन बातें सीखें।

लुदिया एक बहुत धार्मिक स्त्री थी। यद्यपि लुदिया अपने शहर थुआथीरा में नहीं थी परन्तु वह हमें एक ऐसे स्थान पर दिखाई देती है, जहां लोग प्रार्थना करने के लिये इकट्ठे होते थे। पौलूस और उसके साथियों से उसकी मुलाकात होती है। पौलुस ने देखा कि जहां वह है, वहां और भी स्त्रियां प्रार्थना करने के लिये इकट्ठी हुई हैं। (प्रेरितों 16:13)। जब पौलूस ने वहां स्त्रियों को प्रचार किया तब लुदिया ने बड़े ही ध्यान से उसके प्रचार को सुना। पौलुस के प्रचार से लुदिया को यह निश्चय हो गया कि वह धार्मिक तो है परन्तु पूर्ण रूप से उसने परमेश्वर की इच्छा का पालन नहीं किया है।

क्योंकि लुदिया ने खुले मन से पौलूस द्वारा कही गई बातों को स्वीकार किया था इसलिये उसने तुरन्त बपतिस्मा लिया (14 और 15 आयत)। उसने यह नहीं कहा, "मैं अपने धार्मिक जीवन से सन्तुष्ट हूं तथा जैसी मैं हूं, परमेश्वर मेरा उद्धार करेगा।" परन्तु इसके विपरीत उसने परमेश्वर द्वारा दी गई योजना को माना। आज बहुत से ऐसे लोग हैं जो सत्य को जानते हुए भी, इसे मानना नहीं चाहते। वे बपतिस्मा इसलिये नहीं लेना चाहते क्योंकि वे अपने घरवालों या प्रचारक तथा समाज से डरते हैं। वे एक सच्ची कलीसिया के विषय में जानते हुए भी उसके सदस्य बनना नहीं चाहते।

बपतिस्मे के तुरन्त बाद लुदिया ने हमें अपने जीवन का एक और अच्छा उदाहरण दिया। उसने पौलूस तथा उसके साथियों की काफ़ी मेहमान नवाज़ी की तथा उन्हें अपने घर ले गई। (15 आयत)। हम मसीहीयों को यह आज्ञा दी गई है कि हमें अतिथि सत्कार करने वाला होना चाहिए। (रोमियों 12:13)। हमें ऐसे अवसरों की खोज में रहना चाहिए जब हम अपनी आशीषों को दूसरों के साथ बांट सकें।

आईये लुदिया के उदाहरण को सामने रखकर हम धार्मिकता में, आज्ञा पालन करने में तथा अतिथि सत्कार करने में सर्वदा आगे बढ़ें।

शैतान का सामना करो

"इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ, और शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।" (याकूब 4:7)।

पृथ्वी पर जब हम अपना जीवन बिताते हैं तब अक्सर हमारे सामने अनुचित कार्य करने की परीक्षा आती है। कई बार हम परीक्षा में फंस जाते हैं और ग़लत कार्य कर बैठते हैं। इन्हीं ग़लत कार्यों को कहते हैं, "पाप"। जब हम पाप करते हैं तब परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं। पाप हमें परमेश्वर से आत्मिक रूप से अलग कर देता है। यदि परमेश्वर से हम अपने पापों के लिये यीशु के द्वारा क्षमा नहीं मांगते तब परमेश्वर हमें अनन्तकाल का दण्ड देगा।

क्या परमेश्वर हमें परीक्षा में डालता है कि हम अनुचित कार्य करें? नहीं। याकूब कहता है, "जब किसी की परीक्षा हो तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा होती है, और न वह किसी की परीक्षा करता है।" (याकूब 1:13)। जबकि परमेश्वर हमारी परीक्षा नहीं करता तब कौन है, जो हमारी परीक्षा करता है? बाइबल बताती है कि शैतान हमें परीक्षा में फंसाता है। शैतान ने यीशु की परीक्षा ली थी (मत्ती 4:1-11), परन्तु यीशु ने इस परीक्षा के कारण कोई पाप नहीं किया। यीशु ने शैतान का विरोध किया, और शैतान उसे छोड़कर चला गया। प्रेरित पतरस हमें शैतान के विषय में चेतावनी देता है, और हमसे कहता है कि बहुत होशियार रहो क्योंकि, "तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह (शेर) के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। (1 पतरस 5:8)।

हमें बहुत सावधान रहना चाहिए, क्योंकि शैतान अपने आपको इस तरह से दिखाता है कि वह हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचायेगा। यीशु ने झूठे भविष्यद्वक्ताओं के विषय में कहा था कि वे भूखे

भेड़ियों की तरह हैं जो भेड़ों के भेष में आते हैं। (मत्ती 7:5)। प्रेरित पौलूस ने कहा था, "यह कोई अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिमय स्वर्ग दूत का रूप धारण करता है।" (2 कुरि. 11:14)। शैतान की इन चलाकियों से अपने आपको बचाने के लिये, हमें बड़े ध्यान से अपनी बाइबल का अध्ययन करना चाहिये। जब कोई हमें यह सिखाता है कि आपको परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए ऐसा करना है तो हमें उनकी शिक्षाओं को बाइबल से देखना चाहिए जो कि परमेश्वर द्वारा प्रेरित उसका लिखित वचन है। और मनुष्य के लिये बाइबल में उसकी इच्छा दी गई है। यदि उनकी शिक्षाएं बाइबल से नहीं आई हैं तब हम यह समझ सकते हैं कि यह शिक्षाएं शैतान की ओर से है, परमेश्वर की ओर से नहीं है।

हमें इस बात से भी बड़ा सावधान रहना चाहिए कि शैतान हमें संसार की खुशियां दिखाकर फंसाने का प्रयत्न भी करेगा। इस दशा में हमें यह चुनाव करना है कि क्या हमारा संसार में रहकर थोड़े समय का आनन्द उठाना बहुत महत्त्वपूर्ण है, या अनन्त जीवन की आशिषें महत्त्वपूर्ण है? मूसा हमारे लिये एक बहुत महान उदाहरण है जिसने सही समय पर सही चुनाव किया। बाइबल कहती है, "विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरोन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख भोगना अधिक उत्तम लगा। उसने मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्त्र के भण्डार से बड़ा धन समझा, क्योंकि उसकी आखें फल पाने की ओर लगी थी।" (इब्रानियों 11:24-26)।

यदि हम ध्यानपूर्वक परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें तब हम बड़ी ही सरलता से शैतान की चलाकियों तथा परीक्षाओं को पहचान सकते हैं। हमें उसका सामना करना है, यदि हम दृढ़ता से उसका सामना करेंगे तब वह हमारे सामने से भाग जाएगा। (याकूब 4:7)।

क्या यह काफ़ी है?

जब एक स्त्री यह समझ लेती है कि वह एक धार्मिक जीवन व्यतित कर रही है, तब यह स्वाभाविक है कि वह बाइबल की ओर देखती है कि परमेश्वर उससे क्या चाहता है? उसे बहुत सारी ऐसी स्त्रियों के उदाहरण मिलते हैं जो धार्मिक थीं जैसे कि सारा, जिसका परमेश्वर में बहुत बड़ा विश्वास था, तथा मारथा और मरियम जो कि मेहमान नवाज़ी यानि आदर सत्कार करने में पीछे नहीं रहती थीं तथा यीशु और उसके चेलों की उन्होंने बहुत सेवा की थी। दोरकास ने पूरे जीवन भर लोगों की सहायता की तथा प्रिसकिल्ला सुसमाचार फैलाने में पौलूस की सहायता करती थी। बाइबल हमें यह भी सलाह देती है कि हमें अपने पतियों से प्रेम करना चाहिए तथा अपने बच्चों से प्रेम करना और उनकी अच्छी देखभाल करनी चाहिए। दूसरों को यीशु के विषय में बताना तथा सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए तथा इस सब में धीरज़ रखने की बहुत आवश्यकता है। संयम तथा उचित व्यवहार की भी बहुत आवश्यकता है। जो भी स्त्री ऐसा करेगी उसके परिवार में प्रसन्नता होगी। परन्तु क्या यह सब करने से वह अनन्त जीवन, जो कि स्वर्ग में मिलेगा, उसको भी प्राप्त करेगी?

बाइबल का नया नियम हमें बताता है कि कोई भी व्यक्ति अनन्त जीवन को कमा नहीं सकता। यदि कोई व्यक्ति एक हज़ार अच्छे या भले कार्य कर ले या तीर्थ यात्राएं कर लें तौ भी वह अपने पापों से मुक्ति नहीं पा सकता। (इसके लिये देखिये-तीतुस 3:5; इफिसियो 2:4-10)। परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह यीशु के द्वारा हमें पापों से मुक्ति दे सकता है, "क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियो 6:23)। जब हम विश्वास करके बपतिस्मे के द्वारा यीशु को

अपने आप को सौंप देते हैं, तब हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं" तथा हम परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं। (प्रेरितों 2:38; गलतियों 3:26-27)। हमारे बपतिस्मे के पश्चात जब हम निरन्तर परमेश्वर की आराधना करते तथा उस पर भरोसा रखकर उसकी सेवा करते हैं, तब उसका अनुग्रह हमारे पापों को लगातार क्षमा करता रहता है। (1यूहन्ना 1:7)।

मसीही बन जाने के पश्चात हमें उन बातों को करते रहना चाहिए जो धार्मिकता से जुड़ी हुईं हैं ताकि हम परमेश्वर को प्रसन्नं कर सकें। यदि हम पापों से उद्धार पाना चाहते हैं तथा अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं तब हमें यीशु में बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, ताकि हमारे पाप क्षमा हो सकें। (यूहन्ना 3:3-5; मरकुस 16:15-16, 2 थिस्सलुनीकीयों 1:8; प्रेरितों 2:38)। मेरा आपसे यह आग्रह है कि आप अपनी बाइबल को पढ़िये तथा खोजिये कि परमेश्वर की इच्छा आपके लिये क्या है? आज मनुष्य के लिये केवल एक ही आशा है और वो है प्रभु यीशु मसीह तथा उसका सुसमाचार (रोमियों 1:16)।

केवल सुनने वाले नहीं

एक बार यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि वे केवल परमेश्वर की इच्छा को सुनने वाले ही नहीं, बल्कि उसकी इच्छा को पूरा करने वाले बने। यीशु ने कहा था, "इसलिये जो कोई मेरी यह बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आई, और आन्धियां चली, और उस घर से टकराई, फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी यह बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस निर्बुद्धि मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आई, और आन्धियां चलीं, और उस घर से टकराई और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (मत्ती 7:24-27)। ऐसा देखने में आता है कि बहुत सारे लोग बाइबल की शिक्षाओं को सुनना तो चाहते हैं परन्तु बहुत कम हैं जो उनको मानना चाहते हैं।

प्रेरित पौलूस अथेने नामक स्थान पर बहुत सारे लोगों से एक दिन बात कर रहा था। यह लोग बड़े ध्यान से उसे सुन रहे थे क्योंकि वे बड़ी उत्सुकता से नई बातों को जानना चाहते थे। पौलूस उनसे एक सच्चे परमेश्वर के विषय में तर्क-वितर्क करता है। उसने उन लोगों को यह भी बताया कि उद्धार पाने के लिये परमेश्वर उनसे क्या चाहता है। वहां कुछ लोग ऐसा भी सोच रहे थे कि पौलूस मूर्खता की बातें सिखा रहा है। परन्तु कुछ लोग बहुत उत्सुक थे तथा इन बातों के विषय में और जानना चाहते थे। कुछ ऐसे भी थे जो पौलूस की इन बातों को सुनते रहे तथा उन्होंने विश्वास किया। (प्रेरितों 17:16-34)। बाद में पौलूस कुरिन्थुस में गया तथा "वहां आराधनालय के सरदार क्रिसपुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया, और बहुत

से कुरिन्थवासी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों 18:8)।

आप इन लोगों में से किन्हें अपने जीवन का उदाहरण बनायेंगे? क्या परमेश्वर की इच्छा के विषय में आप केवल सुनना चाहेंगे, या उसकी आज्ञा को मानेंगे? क्या आप परमेश्वर की इच्छा को जानकर उसको मानेंगे ताकि आप अनन्त जीवन प्राप्त कर सकें?

परमेश्वर द्वारा प्रेरित, याकूब लिखते हुए कहता है, "परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं।" (याकूब 1:22)।

आज अधिकतर लोग यह विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। उनका यह विश्वास है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। परन्तु अधिकतर लोग यह विश्वास करते हैं कि उद्धार केवल विश्वास से होता है। परन्तु आप सबको गलतियों 3:26-27 पढ़ने की आवश्यकता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" बिना बपतिस्मा लिये हुए प्रभु यीशु को नहीं पहिना जा सकता। यदि आपने अभी तक बपतिस्मा नहीं लिया है, तो आपने मसीह को नहीं पहिना है। पतरस कहता है, "और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के भी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है। (1 पतरस 3:21)।

जीवन का सबसे बड़ा चुनाव

बहुत समय पहिले, इस्त्रएली लोग जो परमेश्वर की अपनी चुनी हुई जाति थी, इस बात की प्रतिक्षा कर रहे थे कि परमेश्वर उन्हें प्रतिज्ञा किये हुए देश में जाने की आज्ञा देगा। वे लोग यरदन नदी के किनारे पर कैम्प लगाकर ठहरे हुए थे तब ही परमेश्वर ने उनके अगुवे मूसा को पहाड़ पर बुलाया। वहां पर मूसा को वो अच्छा स्थान दिखाया गया जो उन्हें मिलना था। परन्तु क्योंकि मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया था इसलिये उसको प्रतिज्ञा किये हुए देश में प्रवेश नहीं दिया गया। पर्वत पर मूसा की मृत्यु हो गई तथा प्रभु ने स्वयं उसे मिट्टी दी।

इससे पहिले कि मूसा की मृत्यु होती, परमेश्वर ने एक दूसरे अगुवे को अपने चुने हुए लोगों के लिये नियुक्त किया। यह अगुवा यहोशु था तथा वह परमेश्वर के प्रति कई वर्षों तक विश्वास योग्य बना रहा। वह उन बारह जासुसों में से एक था जिन्हें कनान देश में तब भेजा गया था जब इस्त्राएलियों को परमेश्वर ने मिस्त्रियों के दासत्व से स्वतंत्र कराया था। इन बारहों में से केवल दो जन थे यहोशु और कालेब जिनका परमेश्वर में विश्वास था कि वह उन्हें प्रतिज्ञा किया हुआ देश दिलवायेगा। परन्तु दूसरे इस्त्राएलियों के विश्वास की कमी के कारण परमेश्वर ने उन्हें जंगल में चालिस वर्षों तक घूमने दिया। अपने अविश्वास के कारण वे जंगल में भटकते रहे। यहोशु मूसा का एक विशेष सहायक था इसलिये परमेश्वर ने उनकी अगुवाई करने के लिये यहोशु को उनका लीडर बनाया।

यहोशु की अगुवाई में कई वर्षों के पश्चात् कनान देश पर विजय प्राप्त कर ली गई तथा यह सब परमेश्वर की महासामर्थ के साथ हुआ तथा यहोशु ने बाद में लोगों को शकेम में एकत्रित किया। और उसने वहां उन्हें याद दिलाया कि परमेश्वर ने कितने लम्बे समय तक किस प्रकार से अब्राम और उसके वंशज की सहायता की तथा बाद

में वह उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में लाया तथा उन्हें कनान जैसी उपजाऊ भूमि दी। यहोशु ने उनसे कहा कि परमेश्वर ने इस प्रकार से कहा है, "फिर मैंने तुम्हें ऐसा देश दिया जिसमें तुमने परिश्रम न किया था और ऐसे नगर भी दिए हैं जिन्हें तुमने न बसाया था, और तुम उनमें बसे हो, और जिन दाख और जैतून के बगीचों के फल तुम खाते हो उन्हें तुम ने नहीं लगाया था।" (यहोशु 24:13)।

परमेश्वर की महानता तथा अच्छाई को याद दिलाने के पश्चात उसने लोगों को चुनौती देते हुए यह ताड़ना दी "और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे? चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानन्द के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियो के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूंगा (यहोशु 24:15)।

जब लोगों ने यह सुना, उन सबने यह सहमति की है कि हम केवल सच्चे परमेश्वर की सेवा करेंगे, उन्होंने कहा, "इसलिये हम भी यहोवा की सेवा करेंगे, क्योंकि हमारा परमेश्वर वही है" (यहोशु 24:18)।

यहोशु ने उनसे यह भी कहा कि यदि वे परमेश्वर के बताये हुए मार्ग पर नहीं चलते, तो परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा, और लोगों ने यह सुनकर एक साथ कहा, "कि हम यहोवा ही की सेवा करेंगे।"

आज़ आपको और मेरे को भी ऐसा चुनाव करना है: क्या हम सच्चे मन से परमेश्वर की उपासना करेंगे या हम मनुष्यों द्वारा बनाये गये देवी-देवताओं की उपासना करेंगे? यदि हम उचित चुनाव करते हैं तो हमें बहुत आशीष मिलेगी। सच्चे और जीवते ईश्वर ने हमसे वायदा किया है कि वह हमें कभी न छोड़ेगा न तजेगा। जिस प्रकार से उसने याकूब से प्रतिज्ञा की थी (उत्पत्ति 28:15)। उसने मसीहीयों से भी वायदा किया है। (इब्रानियों 13:5)। जीवते परमेश्वर की सेवा करना एक बहुत बड़ा चुनाव है। आप भी प्रतिदिन ऐसा करिये, वह आपको आशीषित करेगा।

एक संतुलित जीवन

जब कोई व्यक्ति एक मसीही बन जाता है तब उसका जीवन बदल जाता है। बाइबल कहती है कि वह "एक नई सृष्टि है।" (2 कुरि. 5:17)। नया जीवन कैसा होता है? आईये देखें कि बाइबल इस बदले हुए मसीही जीवन के विषय में क्या कहती है?

यीशु ने कहा था कि वह हमें बहुतायत से जीवन देने आया था। (यूहन्ना 10:10)। उसकी तुलना एक अच्छे चरवाहे से की गई है जो अपनी भेड़ों की सारी आवश्यकताओं को पूरा करता है। वह नहीं चाहता है कि हम निर्धनता की स्थिति में रहें। (2कुरि. 8:13-15)। और न ही उसने हमसे ऐसा कोई वायदा किया है कि वह हमें बहुत सारा धन देगा। परन्तु उसने यह वायदा किया है कि वह हमारी प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करेगा। यीशु ने कहा था, "इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो, ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती 6:33)। यदि हम पुराने नियम के उस बुद्धिमान व्यक्ति की तरह प्रार्थना करें तो हमारे लिये बहुत अच्छा होगा। उसने इस प्रकार से प्रार्थना की थी, "हे प्रभु, व्यर्थ और झूठी बात मुझ से दूर रख; मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना; बस प्रतिदिन की रोटी मुझे खिलाया कर।" (नीतिवचन 30:8); और फिर वह प्रार्थना में कहता है, प्रभु "ऐसा न हो कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इन्कार करके कहूं कि यहोवा (प्रभु) कौन है? या अपना भाग खोकर चोरी करुं, और अपने परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूं।" (पद 9)।

मसीही जीवन एक संतोषजनक जीवन होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि एक मसीही के चेहरे पर हमेशा मुस्काहरट रहेगी या वह कभी उदास नहीं होगा। प्रभु यीशु, जो हमारा बहुत बड़ा उदाहरण है

उदास भी होता था तथा वह कई बार रोया भी था। (मत्ती 23:37-38; 26:38; यूहन्ना 11:35)। हमसे कहा गया है, "आनन्द करने वालों के साथ आनन्द करो और रोने वालों के साथ रोओ।" (रोमियों 12:15)। यीशु यह भी जानता था कि उसके अनुयायी समस्याओं का भी सामना करेंगे। परन्तु समस्याओं और तकलीफों के बीच, प्रसन्न रहने का भी उनका कारण है। (मत्ती 5:3-12) प्रेरित पौलूस ने कहा था, "यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूं, क्योंकि मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं" (फिलि. 4:11)। यह कैसे सम्भव हो सकता है? जब हम अपनी आवश्यकताओं के विषय में चिन्ता नहीं करते, बल्कि सच्चे परमेश्वर से उनके लिये प्रार्थना करते हैं। प्रेरित पौलूस कहता है, "तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी (फिलि. 4:7)।

मसीही जीवन एक शान्तिप्रिय जीवन होना चाहिए। प्रभु यीशु ने कहा था, "धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।" (मत्ती 5:9)। मसीहीयों से यह कहा गया है, "जहां तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो।" (रोमियों 12:18)। तौभी इसी प्रेरित ने एक बार यह भी कहा था कि एक मसीही को अच्छी 'कुश्ती' लड़नी चाहिए (2 तीमु. 4:7)। इन दोनों पदों को देखते हुए हम कैसे कह सकते हैं? हमारी कुश्ती या लड़ाई शैतान से है। उसकी युक्तियों से है। (इफिसियों 6:11-12), पाप से है (इब्रानियों 12:4), लोगों से नहीं है। परमेश्वर के हथियार इस्तेमाल करके हम शैतान को हरा सकते हैं, और यह हथियार है, सत्य, धार्मिकता, शांति का सुसमाचार, विश्वास, उद्धार तथा परमेश्वर का वचन (इफिसियो 6:14-17)। मसीही लोगों को हमेशा यह याद रखना चाहिए कि उनका शत्रु शैतान है, लोग नहीं। पौलूस मसीहियों को लिखता है, "प्रभु के दास को झगड़ालू नहीं

होना चाहिए, पर वह सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण और सहनशील हो। वह विरोधियों को नम्रता से समझाए क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहिचाने और इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएं। (2 तीमुथियुस 2:24-26)। एक मसीही को सब लोगों के साथ शांति से रहना चाहिए, परन्तु शैतान तथा पाप से लड़ना भी आवश्यक है। बाइबल शिक्षा देती है कि हमें शांति स्थापित करने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रेरित पौलूस कहता है, "इसलिये हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो। (रोमियों 14:19)। शांति के साथ रहने के लिये हमें निरन्तर प्रयास करना पड़ता है।

इन उदाहरणों से हमें यह पता चलता है कि मसीही जीवन एक संतुलित जीवन है।

दर्पण

जब आप एक दर्पण में अपने को देखती हैं तो आपको क्या दिखाई देता है? क्या आप देखती हैं कि आपका चेहरा तथा बाल बिल्कुल ठीक है? या आपको ऐसा लगता है कि अभी भी कुछ कमी रह गई है? तथा कुछ ठीक करना बाकी है? क्या आपके बाल सही नहीं बने हुए हैं? या आपके चेहरे पर कोई दाग-धब्बा तो नहीं है? क्या चेहरे पर कोई अप्रसन्नता के भाव तो नहीं दिखाई दे रहे? जब आप देखती हैं कि जैसा होना चाहिए वैसा नहीं है, तब क्या आप उसे ठीक करने का प्रयत्न करती है या आप इस बात पर कोई ध्यान न देकर चुपचाप चली जाती हैं और इस बात को भूल जाना चाहती है?

पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित याकूब नये नियम अर्थात स्वतंत्रता की व्यवस्था या नये नियम की तुलना एक दर्पण से करता है। वह कहता है, "क्योंकि जो कोई वचन का सुनने वाला हो और उस पर चलने वाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह दर्पण में देखता है। इसलिये कि वह अपने आप को देखकर चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था? पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा ही काम करता है।" (याकूब 1:23-25)।

जब हम नये नियम को पढ़कर उसका अध्ययन करते है, तब हमें हमारी आत्मिक स्थिति का पता चलता है, और सचमुच में हम अपने आप को देखेंगे कि हमारी आत्मिक हालत कैसी है। हम यह भी देखेंगे कि अपनी इस बिगड़ी हुई हालत को हम कैसे ठीक कर सकते हैं। यदि हम अपनी बिगड़ी हुई हालत को सही नहीं करते तब हम उस मनुष्य की तरह ठहरेंगे जो अपने चेहरे पर धूल मिट्टी को देखकर भी उसे धोना नहीं चाहता परन्तु यदि हम ऐसे कार्य करते हैं जो परमेश्वर को भाते हैं तब वह हमें बहुतायत से आशीषित करेगा।

एक ऐसी सुन्दरता जो कभी मुरझाती नहीं

जिस संसार में हम रहते हैं वो शारीरिक सुन्दरता को बहुत महत्व देता है। अपने पदार्थों को बेचने के लिये कम्पनियां सुन्दर पुरुषों और स्त्रियों का इस्तेमाल करती हैं। किसी भी वस्तु को आकर्षक दिखाने के लिये इनकी तस्वीर के साथ विज्ञापन दिये जाते हैं। सिनेमा तथा पुस्तकों में दिखाये जाने वाले स्त्री-पुरुष बहुत सुन्दर होते हैं।

हम यह जानते हैं, कि हमारा समाज 'सुन्दर' किसे कहता है, परन्तु यह भी जानना आवश्यक है कि परमेश्वर की दृष्टि में वास्तविक सुन्दरता क्या है? क्या आप सुन्दर दिखती हैं? आप परमेश्वर की दृष्टि में सुन्दर हो सकती है। मसीही स्त्री से परमेश्वर किस प्रकार की सुन्दरता की अपेक्षा करता है? आईये परमेश्वर के वचन से देखें :

परमेश्वर का वचन कहता है:

"तुम्हारा श्रृंगार दिखावटी न हो, अर्थात बाल गूंथना और सोने के गहने, या भांति-भांति के कपड़े पहिनना, वरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आप को इसी रीति से संवारती और अपने-अपने पति के अधीन रहती थीं। जैसे सारा अब्राहम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी। इसी प्रकार तुम भी यदि भलाई करो और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो, तो उसकी बेटियां ठहरोगी।" (1 पतरस 3:3-6)।

"....क्योंकि यहोवा (परमेश्वर) का देखना मनुष्य का सा नहीं है, मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।" (1 शमुएल 16:7)।

"शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।" (नीतिवचन 31:30)।

बाइबल के इन पदों से हम समझते हैं कि हमारी बाहरी सुन्दरता परमेश्वर के सम्मुख कोई महत्व नहीं रखती। बलिक हमारी आत्मिक सुन्दरता तथा हमारे व्यवहार की सुन्दरता उसके सामने बहुत महत्व रखते हैं।

कई बार लोग दूसरों का बाहरी रूप देखकर उन्हें स्वीकार कर लेते हैं या उनको अस्वीकार देते हैं, परन्तु हो सकता है कि ऐसा करके वे शायद अच्छे मित्र या अच्छे रिश्ते खो दें। कई बार वे लोग अपने जीवन में बड़ी निराशा का सामना करते हैं जो बाहरी सुन्दरता या धन-दौलत को अधिक महत्व देखकर विवाह करते हैं। जो उचित विचारधारा के लोग होते हैं वे अन्दरूनी सुन्दरता को महत्व देते हैं तथा बाहरी सुन्दरता पर इतना ध्यान नहीं देते। वे इस बात को भलि-भांति जानते हैं कि सुन्दरता तथा धन इस बात की गारन्टी नहीं दे सकते कि हमारा विवाहित जीवन खुशियों से भरा हुआ होगा।

परमेश्वर बाहरी सुन्दरता को अनुचित नहीं ठहराता। परन्तु वह इस बात पर ज़ोर देता है कि हम बाहरी सुन्दरता को अधिक महत्व न दें। परन्तु क्यों? प्रत्येक जन शारीरिक रूप से सुन्दर पैदा नहीं होता, और वे जो सुन्दर हैं, जानते हैं कि एक दिन आयु के साथ उनकी सुन्दरता मुरझा जाएगी। परन्तु प्रत्येक जन अन्दर से सुन्दर हो सकता है, तथा यह अन्दरूनी सुन्दरता सारे परिवार को समाज को तथा इस संसार को एक सुन्दर रहने योग्य स्थान बना सकती है।

एक व्यक्ति को अन्दरूनी रूप से कौन-सी बातें सुन्दर बना सकती हैं? बाइबल इसका उत्तर हमें देती हैं। एक सुन्दर स्त्री की कुछ विशेषताएं यह है अर्थात वो स्त्री जो अन्दरूनी रूप से सुन्दर है।

वह यहोवा (परमेश्वर) का भय मानती है तथा उसका आदर करती है। (नीतिवचन 31:30)

वह परिश्रमी तथा अपने हाथों से कार्य करती है। (नीतिवचन 31:13-19) और अपनी रोटी बिना परिश्रम के नहीं खाती (27)

वह अपने पति से बुरा नहीं, वरन् भला ही व्यवहार करती है। (नीति 31:11-12)

वह दीन (निर्धन) के लिये मुट्ठी खोलती है, और दरिद्र को संभालने के लिये हाथ बढ़ाती है। (नीति. 31:20)

वह बल और प्रताप का पहिरावा पहिने रहती है, और बुद्धि की बात बोलती है। (नीति. 31:25-26)।

वह नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहती है। (1 पतरस 3:4)

अपने पति का आदर करती तथा उसके अधीन रहती है। (1 पतरस 3:5)।

उसका चालचलन अच्छा होता है, वह दोष लगाने वाली नहीं पर अच्छी बातें सिखाने वाली होती है (तीतुस 2:3)।

वह अपने पति और बच्चों से प्रेम करती है। (तीतुस 2:4)।

वह संयमी, पवित्र घर का काम करने वाली, भली और अपने पति के अधीन रहने वाली होती है (तीतुस 2:5)।
वह अतीथियों की सेवा करती है। (1 तीमुथियुस 5:10)

क्या आप सुन्दर हैं? आप बहुत ही महत्त्वपूर्ण तरीके से अपने को सुन्दर बना सकती हैं। और आपके लिये वो सुन्दर बनने का मार्ग है परमेश्वर का मार्ग। परमेश्वर के मार्ग पर चलकर आप अपने को सुन्दर बना सकती हैं।

क्या हम परमेश्वर में भरोसा रखते हैं?
(प्रेरितों 19:18-20, 23-41)

पौलूस और उसके सहकर्मी जब इधर-उधर घूमकर लोगों को यीशु और उसके उद्धार के विषय में बता रहे थे, तब वे कुरिन्थुस नगर तथा इफिसुस नगर में आये और वहां कुछ समय के लिये रूके। यद्यपि दोनों स्थानों पर उन्होंने एक ही सुसमाचार का प्रचार किया परन्तु दोनों तरफ से लोगों की प्रतिक्रिया बहुत भिन्न थी। कुरिन्थुस में जादूगर लोग अपना खेल दिखाकर पैसे इक्ट्ठा करते थे और यह उनकी आय का एक साधन था। इफिसुस में, कुछ ऐसे लोग थे जो मूर्तियां बनाकर बेचते थे तथा यह उनका कमाई का साधन था। वे लोग डायना देवी की मूर्तियां बेचकर काफी पैसा कमाते थे। ज़रा सोचिये कि कुरिन्थुस के जादू टोना करने वाले तथा इफिसुस के मूर्तियां बनाने वालों को इस बात से कितना धक्का लगा होगा जब उन्होंने अपने धंधे को चौपट होता हुआ देखा होगा। उनका कमाई का साधन अब ढीला पड़ता जा रहा था।

जब कुरिन्थुस के जादूगरों ने यीशु पर विश्वास कर लिया तब उन्होंने अपना जादूगरी का धंधा ही नहीं छोड़ा बल्कि अपनी सारी पोथियां भी जला दी। वे चुपचाप से उन्हें बेच भी सकते थे, परन्तु उन्होंने लोगों को धोखा देना छोड़ दिया था। मुझे नहीं पता कि उन्होंने अपनी आय के साधन के लिये बाद में क्या किया होगा, परन्तु मेरा विश्वास है कि परमेश्वर ने उनके लिये कोई ज़रिया बनाया होगा। वे एक बहुत अच्छा उदाहरण थे।

परन्तु इफिसुस के मूर्ति बनाने वाले अब यह जान चुके थे कि उनका अच्छा भला धंधा काफी चौपट हो चुका है। उन्होंने वहां हुल्लड़ और कोलाहल मचाना शुरू कर दिया। वह भीड़ को भड़का

रहे थे ताकि उन्हें उनसे छुटकारा मिल सके जिनके कारण यह सब कुछ हो रहा था। पैसे के लालच में उन्होंने उस अद्भुत उद्धार के अवसर को ठुकरा दिया था।

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानती हैं जिसने उचित कार्य को करने के लिये अपनी नौकरी छोड़ दी हो या उसकी नौकरी में कोई तरक्की होनी थी और उसे भी उसने अस्वीकार कर दिया हो? या प्रभु की इच्छा पूरी करने के लिये जीवन में कोई रिस्क ली हो? अथवा कोई जोखिम उठाया हो? अमरीका में मैं कुछ ऐसे अध्यापक-अध्यापिकाओं को जानती हूं जिनसे कहा गया था कि, वे परमेश्वर के विषय में न सिखायें परन्तु उन्होंने इस बात को नहीं माना। वे यह भी जानते थे कि ऐसा करने से उन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। कई बार झूठ बोलने के कारण भी किसी की नौकरी जा सकती है। यदि आपके उपर कोई मुसिबत आती है तब क्या आप अपना भरोसा परमेश्वर पर रखेंगी? आईये इस बात का दृढ़ निश्चय करें कि यदि प्रभु का कार्य करते हुए हम पर कोई कठिनाई या मुसीबत आये तब भी हम उन कुरिन्थिुस नगर के जादूगरों की तरह फैसला लेंगे। और परमेश्वर पर निर्भर होकर अपना पूरा भरोसा उस पर रखेंगे। तथा इफिसुस के मूर्ति बनाने वाले लोगों की तरह अपना व्यवहार नहीं दिखायेंगे जिन्होंने उद्धार के प्रति अपनी पीठ घुमा ली थी तथा प्रभु की आज्ञा मानने से मुंह मोड़ लिया था, क्योंकि वे पैसे के लोभी थे। क्या आपका पूर्ण भरोसा महान परमेश्वर में हैं? एक बात हमेशा याद रखें कि पैसे के लालच में अपने ईमान को न बेचें। बुद्धिमान प्रचारक सुलेमान कहता है, "सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं" (नीतिवचन 23:23)।

प्रार्थना का मेरे जीवन में क्या अर्थ है?

प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर से मैं बातचीत कर सकती हूं। वह अपने वचन बाइबल के द्वारा मुझसे बातचीत करता है तथा मैं प्रार्थना के द्वारा उससे बातचीत करती हूं। क्योंकि इसी तरह से हमारी बातचीत होती है और इसलिये इससे मुझे बहुत शांति मिलती है। दोनों में से यदि एक न हो तो इससे इतनी सहायता नहीं मिलेगी।

जब मैं प्रार्थना करूं तो मुझे दिखावा करने की आवश्यकता नहीं है। और न ही अपनी प्रार्थना के द्वारा मुझे किसी को प्रभावित करना है। परमेश्वर पहिले ही से मेरे मन के भेदों को जानता है, इसलिये मैं इस बात से भयभीत नहीं हूं कि वह मेरे विषय में कम सोचता है। जब मैं अपने पापों को मान लूंगी तथा उससे क्षमा मांगूगी तो वह मुझे अवश्य क्षमा करेगा।

जब मैं अकेली होती हूं, परमेश्वर मेरी दुआ को सुनने की प्रतिक्षा करता है। जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने यहोशु से की थी वो आज हमसे भी करता है। उसने कहा था, "जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूंगा, और न तो मैं तुझे धोखा दूंगा, और न तुझ को छोड़ूंगा।" (यहोशू 1:5)। "मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा।" (इब्रानियों 13:5)। वह सदा हमारी सुनता है, उसके वचन के द्वारा मुझे विश्राम तथा अच्छी सलाह मिलती है।

एक विशेष बात यह है कि मुझे अक्सर परमेश्वर से बुद्धि के लिये प्रार्थना करनी चाहिए। मैं जानती हूं कि वह मेरी प्रार्थना का उत्तर अवश्य देगा। बाइबल कहती है, "पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है और उसको दी जाएगी। पर विश्वास से

मांगे, और कुछ सन्देह न करे...." (याकूब 1:5-6)। यदि मैं उससे सहायता न मांगू तो यह सोचकर डर लगता है कि मैं और कितनी गलतियां कर बैठूं।

अनेकों बार मेरे सामने चुनौती से भरी हुई स्थितियां पैदा हो जाती हैं, और मैं जानती तक नहीं कि परमेश्वर से क्या कहूं? परन्तु आत्मा सहायता करता है ताकि परमेश्वर पिता से मैं वो कह सकूं जो मुझे कहने में कठिनाई हो रही है। हमें रोमियों 8:26-27 में बताया गया है कि, "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है: क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर कर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये बिनती करता है; और मनों का जांचने वाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।

बाइबल के द्वारा मैं यह जानती हूं कि मेरे साथ जो भी परेशानी है मैं उसके लिये प्रार्थना कर सकती हूं। मैं परमेश्वर की प्रशंसा तथा स्तुति करती हूं तथा तमाम आशीषें जो उसने मुझे दी हैं उसके लिये धन्यवाद देती हूं तथा उन आशीषों के लिये उससे विनती करती हूं जिनकी अभी मुझे आवश्यकता है। परमेश्वर की बुद्धि तथा सामर्थ असीमित हैं, और मैं जानती हूं कि वह मुझसे सच्चा प्रेम करता है। सो मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब मैं प्रार्थना करूं तब उसकी इच्छा पूरी होगी, तथा वह मेरी प्रार्थना का मुझे उत्तर देगा। शायद वह वो उत्तर न हो जिसकी मैं आशा कर रही थी, परन्तु मैं जानती हूं कि यह एक बहुत अच्छा उत्तर होगा और इस बात, से मुझे बहुत, शांति मिलती है। प्रेरित पौलूस कहता है, "अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर

सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हममें कार्य करता है, कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी-पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। (इफिसियों 3:20-21)। इसलिये हमें प्रार्थना करने में आलसी नहीं होना चाहिए। निरन्तर प्रार्थना में लगे रहना चाहिए। (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। यीशु ने शिक्षा दी थी कि स्वर्गीय पिता अपने बच्चों की प्रार्थना सुनकर उन्हें आशीष देता है। (मत्ती 7:7-11)। कई बार दुखों का बोझा इतना बढ़ जाता है कि हम परमेश्वर को लगातार याद करने लगते हैं। परमेश्वर से प्रार्थना करने से हमें बहुत शांति मिलती है। प्रार्थना करना एक आज्ञा है तथा साथ ही हमारे लिये एक सुअवसर भी। इब्रानियों का लेखक कहता है, "इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्ध कर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करें।" (इब्रानियों 4:16)।

शोक करना या दु:खी होना

प्रेरित पौलूस ने यीशु का प्रचार करते हुए कई यात्राएं की थीं और इनमें से एक स्थान था इफिसुस। जब पौलूस कुछ समय तक इफिसुस शहर में रह चुका तब एक व्यक्ति जिसका नाम देमेत्रियुस था जो एक सुनार था उसने पौलूस और उसके साथियों के लिये समस्या उत्पन्न कर दी। वे पौलूस और मसीहीयों के विरोध में लोगों को भड़का रहा था। तब पौलूस इफिसुस को छोड़कर चला गया तथा सुसमाचार का प्रचार करते हुए दूसरे स्थानों पर गया। प्ररन्तु वह इफिसुस के मसीहीयों को भूला नहीं। वे उनसे बहुत प्रेम करने लगा तथा उनकी आत्मिक स्थिति की उसे बहुत चिन्ता थी। इसलिये जब पौलूस यरूशलेम जाते हुए इफिसुस से गुज़रा तो उसने अध्यक्षों (elders) से विनती की कि वे उसे मिलेतुस में मिलें। जब अध्यक्ष उससे मिलने आए तब पौलूस ने उनसे कहा कि वे झुंड या कलीसिया की रखवाली करें तथा झूठे प्रचारकों से कलीसिया को सावधान करें। उसने यह भी कहा कि उसके साथ क्या होगा क्योंकि वह जानता था कि यीशु के कारण उसे भी बन्दी बनाकर क़ैदखाने में डाल दिया जायेगा। वह उनसे अब नहीं मिल पाएगा।

जब अध्यक्षों ने यह बात सुनी तब वे बहुत दु:खी हुए, क्योंकि वे पौलूस से बहुत प्रेम करते थे। बाइबल हमें बताती है कि यह बात सुनकर उनकी प्रतिक्रिया कैसी थी: "तब वे सब बहुत रोए और पौलूस के गले से लिपटकर उसे चूमने लगे। वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे, जो उस ने कही थी, कि तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे, और उन्होंने उसे जहाज़ तक पहुंचाया। (प्रेरितों 20:37-38)।

एक बार मैं किसी मसीही व्यक्ति के अंतिम संस्कार में गई थी, वहां मैंने एक प्रचारक को मृतक के परिवार वालों से यह कहते सुना कि वह उदास न हो क्योंकि उनका प्रिय जन इस संसार को छोड़कर

एक अच्छे घर में चला गया है। मैंने सोचा कि यह बात इतनी उचित नहीं है। यह सच्च है कि हमें उस मसीही के विषय में उदास नहीं होना है जो इस संसार को छोड़कर चला गया है। (1 थिस्स 4:13), परन्तु यह एक स्वाभाविक बात है और ऐसा होना बहुत नार्मल सी बात है कि हम उदास तथा दु:खी हो क्योंकि वह व्यक्ति अब हमें इस संसार में नहीं दिखेगा। क्योंकि वह हमसे हमेशा के लिये जुदा हो गया है। यह बात सच है कि हम जिनसे प्रेम करते हैं उन्हें मिस करते हैं क्योंकि वे हमारे बीच में अब नहीं है। हमारा दु:ख उन मसीही परिजनों के लिये नहीं है जो इस संसार से चले गए हैं परन्तु अपने लिये है। क्योंकि अब हम उस व्यक्ति को मिस करेंगे, विशेष बात यह है कि अब हम उस व्यक्ति को पृथ्वी पर देखेंगे नहीं। पौलूस के लिये जब इफिसुस में अध्यक्ष (elders) दु:खी हुए तो बाइबल इस बात को ऐसे नहीं दिखाती कि यह कोई लज्जा की बात थी। क्योंकि उनका आपस में बहुत प्रेम था, इसलिये अलग होते हुए दु:खी होना भी स्वाभाविक था।

दु:खी होने के और भी बहुत से कारण हो सकते हैं जैसे कि बीमारी, किसी के सामने कोई समस्या, कोई परिवार का सदस्य हमारा विरोध करे तथा जब हमारा कोई बेटा या बेटी घर छोड़कर चला जाता है। परन्तु प्रत्येक स्थिति में हमें यह जानने की आवश्यकता है या हम जानते हैं कि परमेश्वर के कन्ट्रोल में सब बातें हैं। वह हमें किसी ऐसी परीक्षा या दु:ख में नहीं पड़ने देगा, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।" (1 कुरि. 10:13)। वह अपने लोगों को सामर्थ देता है, आशा देता है तथा शांति देता है। इस बात को याद रखें तथा उसमें अपना पूरा भरोसा रखें, जब दु:ख का समय आये तो हिम्मत न हारें बल्कि उसमें भरोसा रखकर उससे शक्ति मांगे। प्रभु से प्रार्थना करके शक्ति मांगे कि, "प्रभु इसे सहन करने की मुझे शक्ति दे।"

एक योग्य सहायक

इस संसार की रचना के छटवें दिन परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया। और इसके पश्चात उसने स्त्री की रचना की: "फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, 'आदम' का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाए"....तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया, और उसको आदम के पास ले आया। (उत्पत्ति 2:18, 21-22) जगत की उत्पत्ति से पहिले परमेश्वर यह जानता था कि पुरुष को एक सहायक की आवश्यकता पड़ेगी। पुरुष की आवश्यकता को पूरा करने के लिये परमेश्वर ने स्त्री को बनाया। स्त्रियों को यह सोचने की आवश्यकता है कि हम स्त्रियां अपने पतियों की आवश्यकताओं को कैसे पूरा कर सकती है?

सबसे पहिले, हम यह देखते हैं कि एक स्त्री को अपने पति के आधीन रहना चाहिए क्योंकि पुरुष की रचना स्त्री से पहिले की गई थी और स्त्री ने सबसे पहिले पाप किया था। (1 तीमुथियुस 2:11-14 तथा उत्पत्ति 3:16)। पुरुष के आधीन रहने वाली आज्ञा, स्त्री के जीवन को दु:खपूर्ण बनाने के लिये नहीं दी गई है, जैसा कि हम इफिसियों 5:22-23 से सीखते हैं। यहां इन पदों में लिखा है कि एक पति को अपनी पत्नी से ऐसे प्रेम करना चाहिए जैसे यीशु ने अपनी कलीसिया से किया था अर्थात उसने कलीसिया के लिये अपने प्राणों को दे दिया। पतियों को अपनी पत्नियों की इस प्रकार से देखभाल करनी चाहिए, जैसे कि वे अपनी देहों की करते हैं। जैसा कि परमेश्वर के वचन में लिखा है "पर तुम में से हर एक अपनी अपनी

पत्नी से अपने समान प्रेम रखें और पत्नी भी अपने पति का भय माने।" (पद 33) यह एक बहुत सुन्दर रिश्ता है।

दूसरी बात, हम यह देखते हैं कि एक पत्नी को अपने घर का वातावरण जितना भी संभव हो खुशनुमा बना कर रखना चाहिए। प्रेरित पौलूस ने अपने साथी तीमुथियुस को लिखते हुए कहा था, "इसलिये मैं यह चाहता हूं कि जवान विधवाएं विवाह करें और बच्चे जनें और घरबार संभाले और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें।" (1 तीमुथियुस 5:14)। हम अपने परिवारों को बहुत अच्छा और सुन्दर बना सकते हैं, इसके लिये हमें घर की सफ़ाई तथा अपने बच्चों को अच्छी ट्रेनिंग देने की आवश्यकता है। अपने बच्चों को सिखायें कि वे दूसरों के प्रति नम्र तथा दयालु बने तथा प्रत्येक स्थिति में सबके सामने मसीही व्यावहार का एक अच्छा उदाहरण रखें। हमें ऐसी स्त्रियां होना चाहिए जो मेहमानों को अपने घर में देखकर चिड़चिड़ापन महसूस न करें बल्कि यदि हमारे अन्दर एक अच्छा मेहमान नवाज़ी करने वाला मन होगा तो इससे हमारे पतियों को आदर मिलेगा अर्थात दूसरे लोग देखकर यह बोलेंगे कि उस भाई की पत्नी बहुत अच्छी है। परमेश्वर ने जिस प्रकार से हमें आशीषित किया है उसी तरह हमें भी अपनी आशीषों को दूसरों के साथ बांटना चाहिए। यदि हम स्त्रियां ऐसा करेंगी कि तो इससे हमारे पतियों को कलीसिया की अगुवाई करने में सहायता मिलेगी तथा उन्हें इस योग्य भी बनाएगी ताकि वे कलीसिया की अगुवाई करने के लिये चुने जा सके। (1 तीमु. 3:2)।

तीसरी बात, हम यह देखते हैं कि यदि किसी स्त्री का पति मसीही नहीं तो वह उसकी सहायता एक विशेष तरीके से कर सकती है। अर्थात अपने अच्छे मसीही व्यवहार से वह अपने पति को मसीह के लिए जीत सकती है। प्रेरित पतरस इसके विषय में कहता है, "हे पत्नियों, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। इसलिये कि यदि इन में

कोई ऐसे हो जो वचन को न मानते हो, तो भी तुम्हारे भय सहित पवित्र-चालन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाएं।" (1पतरस 3:1-2)। हमारे शब्दों से अधिक हमारा अपना अच्छा जीवन लोगों को अधिक आकृषित करता है। ज़रा उस दिन को याद कीजिए जब आप अपने घर को छोड़कर अपने पति के साथ एक नये स्थान और एक नये परिवार में गई थीं। आपको विवाह के बंधन में परमेश्वर ने जोड़ा था तथा यीशु ने कहा था, "इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करें।" (मत्ती 19:6) परन्तु बात यह है कि यदि पति-पत्नी के बीच कोई दरार आती है तो वह हमारी अपनी गलतियों के कारण होता है।

आईये हम पत्नियां उस उद्देश्य को पूरा करने का प्रयत्न करें, जिसके लिये स्त्री को बनाया गया है। हम पत्नियों को यह कोशिश करनी चाहिए कि हम अपने पतियों के लिये अच्छे सहायक बन सकें। क्या आप अपने पति की अच्छी सहायक हैं? क्या आपके जीवन के कारण आपके पति को दूसरों से आदर सम्मान मिलता है?

प्रभु में सदा आनन्दित रहो

फिलिप्पियों के मसीहीयों को प्रेरित पौलूस ने जब पत्र लिखा तो उनका साहस बढ़ाने के लिये उसने उनसे कहा, "प्रभु में सदा आनन्दित रहो, मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो। (फिलिप्पियों 4:4)। क्या पौलूस का यह अर्थ था कि मसीहीयों के सामने कोई समस्याएं नहीं आयेंगी, इसलिये वे सदा प्रसन्न रहें? इस समस्याओं भरे संसार में हम हमेशा कैसे प्रसन्न रह सकते हैं?

प्रेरित पौलूस यहां यह कहने का प्रयत्न नहीं कर रहा कि मसीहीयों के सामने कोई समस्याएं नहीं आयेंगी। मसीहीयत के लिये पौलूस को स्वयं भी बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था। (2 कुरि. 11:23-27)। कठिनाईयों में आनन्दित होने का हमारे लिये एक कारण है, जो हमें रोमियों की पत्री में मिलता है। अर्थात कोई भी खराब स्थिति हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती। (रोमियों 8:35-39)। परमेश्वर हमारी समस्याओं को जानता है तथा उसे हमारी चिन्ता हैं वह हमारी समस्याओं में से कई बार हमारे लिये आशिष उत्पन्न करता है (रोमियों 8:28), यद्यपि अनेकों बार हमें इसका पता भी नहीं चलता। प्रेरित पौलूस कहता है, "सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर हैं, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? (रोमियों 8:31) क्योंकि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है तथा हमारी चिन्ता करता है, इसलिये हम सच्चे मन से, उसमें आनन्दित हो सकते हैं। याद रखें प्रभु में आनन्दित रहना एक बहुत आशिष की बात है। एक मसीही स्त्री होने के नाते आप प्रभु में सदा आनन्दित रह सकती हैं।

प्रसन्न कैसे रहें?

प्रसन्नता एक ऐसा विषय है जिसके विषय में प्रत्येक व्यक्ति सोचता है। इस संसार में सब लोग प्रसन्न रहना चाहते हैं परन्तु थोड़े लोग हैं जिन्हें प्रसन्नता मिलती है। कई लोगों का मानना है कि प्रसन्नता केवल उन लोगों तक सीमित हैं जो धनी हैं परन्तु सत्य तो यह है कि संसार में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो धनी हैं परन्तु बहुत दुःखी हैं। प्रसन्नता का आधार यह होता है कि कोई व्यक्ति कैसा है न कि यह कि उस व्यक्ति के पास कितना धन है। यह बात सत्य है कि पैसा तथा भौतिक वस्तुएं हमें खुशी दे सकती हैं, परन्तु यह एक वास्तविक खुशी नहीं होगी। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह कितना भी गरीब है, खुश रह सकता है। परन्तु आवश्यकता यह है कि वह इस खुशी को परमेश्वर द्वारा बताये हुए मार्ग के अनुसार खोजे।

बाइबल में ऐसे बहुत से पद है जो हमें बताते हैं कि परमेश्वर चाहता है हम सदा प्रसन्न रहे। नीतिवचन 16:20 में लिखा है, "जो वचन पर मन लगाता है, वह कल्याण पाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता वह धन्य होता है," प्रेरित पौलूस फिलिप्पियों के मसीहीयों को लिखते हुए कहता है, "प्रभु में सदा आनन्दित रहो, मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो।" (फिलि. 4:4)। मत्ती के पांचवे अध्याय में प्रभु यीशु हमें बताता है कि वास्तविक प्रसन्नता जो परमेश्वर के द्वारा मिलती है, हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं? बाइबल में मत्ती के पांचवें अध्याय में हम कुछ धन्यवादियों के विषय में पढ़ते हैं जिनका अर्थ है एक गहरी प्रसन्नता और यीशु ने इस गहरी प्रसन्नता के विषय में इस प्रकार से कहा था:

"धन्य हैं, वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"

"धन्य है वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे।"
"धन्य हैं वे जो नम्र है, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।"
"धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।"
"धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।"
"धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।"
"धन्य हैं वे, जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।"
"धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताएं जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"
"धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि, तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है..."। (मत्ती 5:3-12)।

यहां यीशु इस बात पर ज़ोर देकर यह कह रहा है कि यदि आप प्रसन्न रहना चाहते हैं, तो एक तरीका है और वो है उन बातों को मानना जो अभी हमने देखी है। अर्थात प्रभु यीशु की शिक्षाओं पर चलना। यदि हम उसकी शिक्षाओं पर चलेंगे तो अवश्य परमेश्वर हमें आशीषित करेगा तथा इसके द्वारा हम प्रसन्न रहेंगे।

ज्ञान में आगे बढ़ना

होशे भविष्यदूक्ता ने अपने लोगों के विषय में कहा था कि, "मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई, तूने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है।" (होशे 4:6)। परमेश्वर चाहता है कि सब लोग पापों से उद्धार पायें। और पापों से उद्धार पाने के लिये हमें परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहिए तथा उसकी अज्ञाओं का पालन करना चाहिए। (1 तीमुथियुस 2:3-4 तथा यूहन्ना 8:32)। सत्य को हमें इसलिये भी जानने की आवश्यकता है ताकि हम इसे अपने बच्चों को भी बता सकें। (2 तीमुथियुस 1:5; 3:15)।

सत्य को हम कैसे जान सकते हैं? क्या हमें वो सब स्वीकार कर लेना चाहिए जो हमें धार्मिक अगुवों द्वारा सिखाया जाता है? हमारे पति तथा मित्र जो भी हमें बतातें हैं या सिखाते हैं क्या हमें आंख बंद करके मान लेना चाहिए? बाइबल हमें कुछ ऐसे लोगों के विषय में बताती है जो प्रेरितों की शिक्षा पर विश्वास करने में भी बड़ी होशियारी बरतते थे। और इस बात के लिये उनकी प्रशंसा भी की गई थी। बाइबल उनके विषय में कहती है, "ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहुदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूढ़ते रहे कि यह बातें यूंही हैं कि नहीं।" (प्रेरितों 17:11)। प्रेरित पौलूस ने गलतियों नामक स्थान पर मसीहीयों को लिखते हुए कहा था कि जो सुसमाचार उन्होंने माना है यदि उसे छोड़ कोई और सुसमाचार सुनाएं तो वह स्त्रपित हो- चाहे कोई स्वर्गदूत भी दूसरा सुसमाचार लाए वो भी स्वीकार मत करना।" (गलतियों 1:8)। हम कैसे जान सकते हैं कि कोई हमें सच्चाई सिखा रहा है या नहीं? हम इस बात को अच्छी प्रकार से तभी मान सकते हैं यदि सिखाने वाला उस बात को प्रमाणित करके दिखाये कि यह शिक्षा वचन अनुसार सत्य है। धार्मिक बातों के लिये अपना

भरोसा लोगों तथा धार्मिक गुरूओं पर न रखें बल्कि स्वयं इसकी जांच पड़ताल करें।

प्रभु चाहता है कि हम स्वयं बाइबल का अध्ययन करें। (2तीमु. 2:15)। जब हम परमेश्वर तथा उसके वचन के सत्य को सीख लेते हैं, और उसको मान लेते हैं, तब हमें निरन्तर अध्ययन करते रहना चाहिए ताकि बाइबल में हमारा ज्ञान बढ़ सके। जिस प्रकार से प्रेरित पतरस ने मसीहीयों को बहुत पहिले लिखा था, "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ।" (2 पतरस 3:18)। हमें निर्मल आत्मिक दूध की आवश्यकता है। पतरस मसीहीयों से कहता है, "नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।" (1 पतरस 2:2)। इब्रानियों का लेखक कहता है, "समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जान चाहिए था तौ भी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाएं? और ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। पर अन्न सयानों के लिये है..." (इब्रानियों 5:12-14)।

संयम रखने में आगे बढ़ना

जब हम मसीही बन जाते हैं, तब हम अपने आप को पूर्ण रूप से परमेश्वर की सेवा के लिये सौंप देते हैं। परमेश्वर जानता है कि हम एक दम से अपने 'नये जन्म' के पश्चात मजबूत मसीही नहीं बन सकते इसलिये हमारे इस नये जन्म के आरंभ में वह हमसे बहुत अधिक अपेक्षा नहीं करता। मसीहीयों को लिखते हुए प्रेरित पतरस कहता है, "नये जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।" (1 पतरस 2:2)। परन्तु परमेश्वर यह अवश्य चाहता है कि बपतिस्मा लेने के पश्चात हम आत्मिकता में आगे बढ़े। पतरस ऐसे बहुत से गुणों को भी बताता है। जिनमें हमें एक मसीही होते हुए आगे बढ़ना है: "और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ।" (2 पतरस 1:5-7)।" 'संयम' का अर्थ है, "अपने पर कंट्रोल रखना।"

संयम रखना बड़ा ही कठिन होता है। परन्तु यदि हम ईमानदारी से इसके लिये प्रयत्न करें तथा सबसे प्रथम अपनी ज़बान को लगाम दें, तब हमारा पूरा शरीर कंट्रोल में आ जायेगा। हमारी जुबान हमारा बहुत नुकसान कर सकती है। थोड़े से क्रोध के क्षणों में हम ऐसी बातें कह जाते हैं जो हमें कहनी नहीं चाहिए थीं। इन शब्दों से दूसरे व्यक्ति को बहुत गहरी चोट पहुंच सकती है। कई बार अपनी जीभ से कुछ ही क्षणों में हम बिना सोचे समझें कुछ झूठी बातें बोल देते हैं जिनके विषय में हम यह सोचते हैं कि यह सच्च से अधिक आवश्यक है। क्योंकि हम आत्मिक रूप से कमज़ोर हैं तथा हमारे में

दूसरों के प्रति प्रेम नहीं है इसलिये हम शायद उनकी बुराई इधर-उधर करते फिरते हैं। कई बार शायद यह भी हो सकता है कि हम अपनी सफलता पर तथा अपनी वस्तुओं पर घमण्ड करें और ऐसा करके दूसरों के मनों में ईर्ष्या उत्पन्न करें। बहुत सी ऐसी बातें हैं, जिनके द्वारा हम अपनी ज़बान पर संयम रखने में असफल हो जाते हैं।

याकूब 3:2-4 से हमें पता चलता है कि यदि हम अपनी जीभ पर कन्ट्रोल रखें तो हम अपनी पूरी देह पर कन्ट्रोल कर सकते हैं। लिखा है, "इसलिये कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं, जो कोई वचन में नहीं चूकता वही तो सिद्ध मनुष्य हैं, और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है। जब हम अपने वश में करने के लिये घोड़ों के मुंह पर लगाम लगाते हैं, तो हम उन की सारी देह को भी फेर सकते हैं। देखो, जहाज भी, यद्यपि ऐसे बड़े होते हैं और प्रचण्ड वायु से चलाएं जाते हैं तो भी छोटी सी पतवार के द्वारा मांझी की इच्छा के अनुसार घुमाएं जाते हैं।" बुराई करने से अपनी जीभ को बचायें। हम अपनी जीभ को प्रतिदिन कई बार इस्तेमाल करते हैं। यदि हम अपनी जीभ को कन्ट्रोल नहीं करेंगे तो हमारे परिवार, कलीसिया तथा आस-पास के लोगों की शांति भंग हो सकती है।

आईये सबसे पहिले हम अपनी जीभों को कन्ट्रोल या वश में करने का प्रयत्न करें। प्रेरित पतरस ने कहा था कि हमें अपनी जीभ को बुराई से बचाना चाहिए, वह इस प्रकार से कहता है, "क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होठों को छल की बातें" करने से रोके रहे। (1 पतरस 3:10)।

दु:खों के द्वारा धीरज उत्पन्न होता है

प्रेरित पौलूस मसीहीयों को रोम में लिखते हुए कहता है, "केवल यही नहीं, वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज और धीरज से खरा निकलना और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।" (रोमियों 5:3)। दु:खों में भी प्रसन्न रहना कैसे सम्भव हो सकता है? और किस प्रकार से दु:खों से धीरज उत्पन्न होता है?

पौलूस ने भी स्वयं मसीहीयत के लिये काफी दु:खों का सामना किया था। उसे पीटा गया, पत्थरवाह किया गया तथा जिन पानी के जहाजों से वह यात्रा करता था वे टूट गये थे तथा रात दिन उसे समुद्र में काटना पड़ा। और यह सब उसने परमेश्वर के वचन को फैलाने के लिये किया था।

यदि हमने मसीह के साथ दु:ख उठाया है तब उसके कार्य को करने के कारण- हमें उसके साथ अवश्य महिमा मिलेगी। पौलूस के सम्मुख यह दु:ख कुछ भी नहीं थे क्योंकि वे इन्हें उस प्रतिफल से मिलाकर देखता था जो परमेश्वर उसे भविष्य में देने वाला था। पौलूस कहता है, "आत्मा आप ही हमारी गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान है। और यदि सन्तान है, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दु:ख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं। (रोमियों 8:16-17)। और फिर वह कहता है, "क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।" (2 कुरि. 4:17)। इसी कारण मसीही जीवन के कारण यदि हम पर कोई कठिनाई आती है तो हमें प्रसन्न होना चाहिए। यीशु ने कहा था, "धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें,

और सताएं और झूठ बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है, इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यदूक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था।" (मत्ती 5:11-12)

शायद हमें ऐसा लगे कि परमेश्वर ऐसा होने दे रहा है कि दुष्ट लोग हमें सतायें, तथा वह उन्हें उनकी दुष्टता का दण्ड नहीं देता। परन्तु यीशु ने इस प्रकार से कहा था, "सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उसकी दुहाई देते रहते; और क्या वह उनके विषय में देर करेगा?" (लूका 18:7) परमेश्वर नहीं चाहेगा कि दुष्ट बिना दण्ड के बचकर निकल जाये। परमेश्वर का दण्ड अवश्य होगा तथा "वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। (2 थिस्स. 1:9)।

जबकि हम यीशु के कारण इस संसार में सतायें जाते हैं, तब हम यह भी सीख रहे हैं कि हम धीरज रखें और साथ ही हम अपने को मज़बूत बनाना सीख रहें है क्योंकि परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देगा तथा जो विश्वास योग्य हैं उन्हें प्रतिफल देगा। प्रेरित पौलूस कहता है, "क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं है।" (रोमियों 8:18)। "इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए हैं, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।" (इब्रानियों 12:1)।

प्रभु पर आशा लगाए रखना

क्या कभी आप अपना धीरज खो देते हैं? मनुष्य की एक आदत भी होती है कि वह अक्सर अपना धीरज खो देता है। शायद हमें किसी ने मिलने का समय दिया हो, और हम जल्दी में है तथा हम बड़े परेशान हो जाते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे शीघ्र ही प्रभु की आज्ञा को मान लें। हमारी एक योजना है और हम चाहते हैं कि यह आज ही पूरी हो जाये। हम शायद इस प्रकार से सोचते हैं कि हमारा सोचने का यह तरीका बिल्कुल उचित है। परन्तु परमेश्वर ऐसा नहीं सोचता। हमें बाइबल में कई बार यह देखने को मिलता है कि परमेश्वर हमारे विषय में जानता है कि हमारे लिये क्या सही है और क्या ग़लत? कई सौ वर्षों पहिले परमेश्वर के भविष्यदूक्ताओं ने यह बता दिया था कि जगत में एक उद्धारकर्ता आयेगा। यीशु मसीह के इस संसार में आने से पहिले लोग बड़े समय से एक उद्धारकर्ता की बांट जोह रहे थे। परन्तु परमेश्वर उचित समय जानता था कि किस समय यीशु को जन्म लेना था तथा यह भी कि जगत के उद्धार के लिये वह ठीक समय पर बलिदान होगा। परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हमको लेपालक होने का पद मिले। और तुम जो पुत्र हो इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है। इसलिये तू, अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ। (गलतियों 4:4-7)।

हमारा यह पक्का विश्वास है कि परमेश्वर सब कुछ जानता है, और उसके पास सारी सामर्थ है, तथा स्वभाव से वह प्रेमी है, तब हमें क्यों यह सन्देह है कि वह हमारे विषय में जानता है कि हमारे

लिये क्या बात बढ़िया है तथा कितना अच्छा हमारे साथ होने वाला है? क्या कहीं ऐसा तो नहीं है कि हम अपनी समझ पर बहुत भरोसा करते हैं, बुद्धिमान राजा सुलेमान ने हमें ऐसा करने के लिये सावधान किया है: "तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा (परमेश्वर) पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना तब वह तेरे लिये भी सीधा मार्ग निकालेगा। (नीतिवचन 3:5-6)।

फिर भी इस बात पर विश्वास करते हुए क्या हमें प्रभु पर आशा करने में कठिनाई होती है? हमें कारण दिये गये हैं तथा यह भी बताया गया है कि परमेश्वर पर अपनी आशा रखने से हमें क्या लाभ होता है। यशायाह हमें बताता है कि जो परमेश्वर पर आशा लगाए रखते हैं वे धन्य हैं। (यशायाह 30:18); जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे (यशायाह 40:31), वह अपने बाट जोहने वालों के लिये काम करेगा (यशायाह 64:4)। और जब हम बाट जोहते है तब परमेश्वर हमारी सुनता है। (मीका 7:7)। परन्तु परमेश्वर यह भी जानता है कि हम अपना धीरज बहुत जल्दी खो बैठते है, तथा कुछ बातों में वह हमें दोषी नहीं ठहराता। क्योंकि हम जल्दबाजी में धीरज खो बैठते हैं। प्रेरित पौलूस बताता है कि किस प्रकार से इस संसार की समस्याओं से बचने के लिये हम कितने उतावले हो जाते हैं। रोमियों के 8:23, 25 में वह कहता है, "और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में कहते हैं, और लेपालक होने की अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं। परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उस की आशा रखते है, तो धीरज से उस की बाट जोहते भी हैं।"

जबकि हम अपने उद्धार के विषय में परमेश्वर पर भरोसा रख

सकते हैं जो कि एक बहुत बड़ी बात है, तब क्यों हम छोटी बातों को लेकर उस पर भरोसा क्यों नहीं करते? कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश या संकट या उपद्रव या अकाल या नंगाई या जोखिम या तलवार?.... परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। (रोमियों 8:35)। परमेश्वर जो यह भी जानता है कि हमारे सिर के बाल कितने है? (मत्ती 10:29-31), वह यह भी जान जायेगा और पक्की तरह से जान लेगा कि उसके बच्चों के लिये अच्छा क्या है। मत्ती 6:25-33 को पढ़िये। हम शायद इसका कारण कभी भी न जान पायें और उसके अद्‌भुत कार्यों को भी न समझ पाये। परन्तु हमें इस बात का पक्का भरोसा होना चाहिए कि उसके कार्य तथा समय हमारे लिये सबसे अच्छे होते हैं। आईये हम इस तरह से जियें ताकि लोग परमेश्वर में हमारे भरोसे को देखें, और यह देखें कि हम उसमें कितने प्रसन्न हैं। वो हमारी कितनी चिन्ता करता है और इस सब को देखते हुए दूसरे लोग भी उसकी ओर आकृषित होंगे। प्रेरित पतरस ने मसीहियों से कहा था, "और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है" (1 पतरस 5:7)।

"प्रभु मेरे साथ रह, मैं तेरे बिना नहीं रह सकती, तेरी इच्छा के बिना मैं एक भी कदम आगे नहीं बढ़ाना चाहती, तेरी सहायता के बिना मैं जीवन के भार नहीं उठा सकती, मुझे तेरी शक्ति क़ी आवश्यकता है, क्योंकि मेरा पूर्ण भरोसा तुझ पर है।"

भीतरी शान्ति को खोजना

जिन परिस्थितियों में हम इस पृथ्वी पर रहते हैं वो हमेशा अच्छी नहीं होती। कई बार हम अपने को बड़ी कठिन समस्याओं से घिरे हुए पाते हैं। शायद परिवार में कई बार कोई बीमार हो जाता है, या किसी प्रिय जन की मृत्यु हो जाती है तथा अनेकों बार आर्थिक समस्याएं भी आती रहती है। कई बार हम पर सताव भी आते हैं, हम आत्मिक रूप से कमज़ोर हो जाते हैं तथा और भी अन्य प्रकार की समस्याएं हमें घेर लेती हैं। इन सब से घिरे हुए जब हम अपने आप को पाते हैं, तथा हमें कोई मार्ग नहीं सूझता तब हमें क्या करना चाहिए? हमें अपने आपको असहाय नहीं समझना चाहिए, क्योंकि मसीहीयों को प्रभु एक विशेष सहायता देता है।

जब पतरस ने उन मसीहीयों को लिखा था जो अपने विश्वास के कारण उपद्रव झेल रहे थे, तथा इधर-उधर तितर-बितरे हो गये थे (1 पतरस 1:1-5), उसने उनसे कहा, "इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।" (1 पतरस 5:6-7)।

यीशु ने अपने चेलों से प्रतिज्ञा की थी कि वह उन्हें शान्ति देगा, परन्तु ऐसी शान्ति नहीं जैसी संसार देता है। यीशु ने कहा था, "मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं, जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता, तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।" (यूहन्ना 14:27)। यीशु ने कभी भी इस बात का वायदा नहीं किया कि हमारा जीवन बिना किसी समस्याओं के होगा, परन्तु वह हमें यह दिखाता

है कि भीतरी शान्ति कैसे प्राप्त होती है, चाहे हमारे सामने समस्याएं कैसी भी हो।

जब हम विश्वास से यीशु के पास जाते हैं, तब वह हमारे तमाम भारों को दूर करके हमारी आत्माओं को विश्राम देगा। साथ ही, हमें यीशु की सेवा करने के लिये सदा तैयार रहना चाहिए क्योंकि उसकी सेवा करने का भार सहज तथा हल्का है। (मत्ती 11:28-30)।

जब हम दु:खों और समस्याओं का अनुभव करते हैं तब हमें उन महान व्यक्तियों के जीवनों को याद करना चाहिए जिनका वर्णन बाइबल में हुआ है। इब्रानियों के ग्यारहवें अध्याय में कुछ ऐसे ही व्यक्तियों का वर्णन हुआ है। जब वे इस पृथ्वी पर रह रहे थे तब उन्होंने अनेकों कठिनाईयों का सामना किया था। कईयों को बहुत सी यातनाएं सहनी पड़ी थीं तथा उन पर बहुत सताव हुआ था और उनका मज़ाक उड़ाया गया था, उन्हें कैदखाने में डाला जाता था, पीड़ाएं दी जाती थीं और कई बार अपने विश्वास के लिये उन्हें मृत्यु का सामना भी करना पड़ता था। परन्तु अपने दृण विश्वास के कारण उन्हें अपने जीवन में विजय प्राप्त हुई। जबकि यह परमेश्वर के भक्त लोग हमारे लिये एक बहुत बड़ा उदाहरण हैं, इससे हमारे विश्वासों में और भी अधिक मज़बूती मिलती है। पृथ्वी पर रहते हुए हमें इन समस्याओं को अपने उपर हावी नहीं होने देना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि हम धार्मिकता के मार्ग पर चलते-चलते भटक जाएं और अनुचित मार्ग को चुन लें। बाइबल का लेखक कहता है, "इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिस ने उस आनन्द

के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दु:ख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा।'' (इब्रानियों 12:1-2)।

चाहे आप की स्थिति कैसी भी हो, यदि आप भीतरी शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको बड़ी नम्रता से प्रभु के पास आना चाहिए, वह आपके सारे भार उठाकर आपकी सहायता करेगा। जीवन की समस्याएं आपको आपके विश्वास से दूर न कर दें। यीशु ने कहा था, ''प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।'' (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

प्रभु यीशु का प्रचार करने के कारण जब प्रेरित पौलूस क़ैदखाने में था तब उसने वहां से ये शब्द अपने साथी मसीहीयों को लिखे थे, ''यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूं; क्योंकि मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं। मैं दीन होना भी जानता हूं और बढ़ना भी जानता हूं: हर एक बात में तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना घटना सीखा है।'' (फिलिप्पियों 4:11-12)। हमें प्रत्येक स्थिति में परमेश्वर पर अपना पूरा भरोसा रखना चाहिए।

✞

अपुल्लोस की नम्रता
प्रेरितों 18:24-28

अपुल्लोस एक बहुत प्रभावशाली व्यक्ति था, वचन को अच्छी तरह से जानता था, प्रभु के मार्ग को भी अच्छी तरह से जानता था तथा लोगों को सिखाने में भी निपुण था परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्में के विषय में जानता था। अक्विला तथा प्रिसकिल्ला ने उसे परमेश्वर का मार्ग और ठीक से बताया। उन्होंने उसका मज़ाक नहीं उड़ाया और न ही सबके सामने उसे लज्जित किया। बड़े प्यार से नम्रतापूर्वक वे उसे ले गये तथा उसे परमेश्वर के वचन के बारे में और अच्छी तरह से समझाया और एक कितनी अच्छी बात जो हम इस व्यक्ति में देखते हैं कि वह बड़ी नम्रता से उनकी बात को सुनता है तथा इस बात से वह क्रोधित नहीं हुआ और न उसने घमण्ड से कहा कि मुझे सब कुछ पता है मुझे मत सिखाओ। जिनको उसने सिखाया था उनके लिये भी वह कितना बड़ा उदारहण था। शायद आजकल के चर्च लीड़र भी ऐसा उदाहरण न दिखायें। क्योंकि वे शायद यह कहें कि "हमें सब कुछ आता है, हमें मत सिखाओ"।

जब हमें यह पता चलता है कि हम बाइबल अनुसार किसी बात में गलत हैं तो हमें अपनी गलती स्वीकार कर लेनी चाहिए। क्या हम ऐसा करते हैं? जिनको हम जानते हैं उनके सामने हम कैसा उदाहरण रखते हैं? क्या हम दूसरों को सही मार्ग पर ला सकते हैं, यदि हम स्वयं परमेश्वर का सही मार्ग जानकर उस पर चलना नहीं चाहते?

मेरे पिता जी ने मुझे एक बार बताया था कि हमारे बाप-दादे किस प्रकार से नये नियम अनुसार मसीही बने थे। मेरे पिता जी के पिता जी तथा उनका सारा परिवार एक साम्प्रदायिक (denomination) कलीसिया के सदस्य थे। परन्तु जब उन्होंने सत्य को जाना और उन्हें नये नियम की कलीसिया के विषय में पता चला तब उन्होंने

आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया। उन्होंने अपने भाई-बहिनों को भी सिखाया और उनमें से कईयों ने प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया, परन्तु एक भाई बहुत ही अड़ियल था। वह बदलना ही नहीं चाहता था। उसने सोचा कि यदि मैं बपतिस्मा ले लूं तो अपने दादा को ही गलत ठहराऊंगा क्योंकि मेरे दादा ने तो हमें कुछ और सिखाया था। परन्तु उसकी यह सोच गलत थी। मेरे दादा ने उसके साथ बहुत बार बाइबल स्टडी की थी परन्तु उसने सुसमाचार को नहीं माना। आज मेरे परिवार में बहुत सारे लोग नये नियम की कलीसिया के सदस्य हैं और यदि मेरे दादा उन्हें नहीं सिखाते तो शायद वे आज मसीही नहीं होते। वे शायद किसी साम्प्रदायिक कलीसिया में होते।

आपका प्रभाव आपके आस-पास के लोगों पर कैसा है? क्या हम उन लोगों को सुसमाचार सुनाने को तैयार हैं जिन्होंने अभी तक सुना नहीं है? यदि आज आप को अपने पुराने जीवन को बदलना पड़े तो क्या आप ऐसा करने के लिये तैयार हैं?

जो सबसे कीमती वस्तु है उसे जुए में लगाना

जुआ क्या होता है? किसी वस्तु को जो हमें चाहिए पाने के लिए अपनी किसी कीमती चीज़ को दांव पर लगाना। यदि हम किसी बात की रिस्क लेते हैं, तो शायद हम यह नहीं जानते कि उसका परिणाम क्या होगा?

कुछ लोग जुआ इसलिये खेलते हैं क्योंकि इससे उन्हें आनन्द मिलता है। उन्हें रिस्क लेने से मज़ा आता है। कुछ लोग इसलिये जुआ खेलते हैं क्योंकि वे इतने सुस्त हैं कि काम नहीं करना चाहते। वे ऐसी वस्तुओं को प्राप्त करना चाहते हैं जिनके लिये उन्होंने कोई परिश्रम नहीं किया। परन्तु यदि आप जुए में हार जाते हैं तो आप वो चीज़ हार गये, जिसके लिये आपने रिस्क ली थी। और यह रिस्क केवल एक थोड़े से आनन्द के लिये थी।

वैसे यदि तर्क के साथ देखा जाये तो कोई भी अपनी कीमती वस्तु के लिये जुआ नहीं खेलेगा, क्योंकि उसे डर रहेगा कि कहीं यह मेरे हाथ से निकल न जाये।

अब प्रश्न यह उठता है कि आपके पास ऐसी कौन सी कीमती वस्तु हैं? क्या आप के पास कोई ऐसी वस्तु है जिसे आप खोना नहीं चाहते? अनेकों ऐसी वस्तुएं है जो भौतिक वस्तुओं से अधिक बहुमूल्य हैं। हमें अनन्तकाल के विषय में विचार करना चाहिए। हमारा यह शरीर जब आत्मा से अलग हो जायेगा तब आत्मा अनन्तकाल तक जीवित रहेगी। हमारे पास एक चुनाव है कि हम अनन्त काल में अपने लिये कौन से स्थान को चुनेंगे? स्वर्ग को या नर्क को? क्या आप अपनी आत्मा के साथ जुआ तो नहीं खेल रहें? जिनसे आप प्रेम करते हैं कहीं उनकी आत्माओं के साथ आप जुआ तो नहीं खेल रहे?

जब हम अपनी मर्ज़ी की ज़िन्दगी जीते हैं तथा आनंद जो संसारिक है, उसे अधिक महत्व देते हैं तो इसका अर्थ यह है कि हम अपनी आत्माओं के साथ जुआ खेल रहे हैं। परमेश्वर ने हमें अच्छा जीवन जीने के लिये कुछ निर्देश दिये हैं। परन्तु यदि हम यह फैसला करते हैं कि हम तो परमेश्वर से पहिले अपने को प्रसन्न करेंगे या अपनी इच्छा पूरी करेंगे तब हम अपनी आत्माओं को अनन्त जीवन के लिये दांव पर लगा रहे हैं। हम अनन्त जीवन के लिये एक रिस्क ले रहे हैं। बाइबल की शिक्षाओं से खिलवाड़ करके हम अपनी आत्माओं के लिये रिस्क ले रहे

हैं। यदि हम बिना मन फिराये इस संसार से चले जाते हैं, तब हम परमेश्वर से हमेशा के लिये दूर हो जायेगे और अनन्तकाल का दण्ड भोगेगें।

परन्तु यह जीवन हमारी मृत्यु तथा हमारे अनन्तकाल के साथ ही समाप्त नहीं होता, हमारे जीवनों का प्रभाव दूसरों पर भी पड़ता है। तथा हमारा प्रभाव उन पर भी अधिक पड़ेगा जिनसे हम अधिक प्रेम करते हैं।

क्या आप अपने प्यारे बच्चों के लिये तथा उनके आत्मिक जीवन को सामने रखते हुए कोई रिस्क लेंगे? अपनी सुविधा के लिये क्या आप अपने बच्चों का जीवन दांव पर लगाएंगे? क्या यह स्वार्थपन नहीं है? कई बार हम ऐसा ही करते हैं हम अपनी तथा अपने प्रियजनों की आत्मा के साथ जुआ खेल रहे होते हैं। कई लोगों का व्यवहार इस प्रकार का होता है कि वे प्रत्येक बात में अपनी ही मर्ज़ी को पूरा करना चाहते हैं। यह व्यवहार बड़ा ही खतरनाक होता है। परमेश्वर ने अपने वचन में वो सब कुछ बताया है जो हमारी आत्माओं के उद्धार के लिये आवश्यक है। उसने हमें निर्देश दिये हैं कि हम उसे कैसे प्रसन्न कर सकते हैं। अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिये हमें इन निर्देशों का पालन करना हैं और यदि हम बाइबल में कुछ जोड़ते है या उसमें से कुछ घटाते है तब हम अपनी आत्माओं को जोखिम में डाल रहे है। यिर्मयाह भविष्यवक्ता ने कहा था, "हे यहोवा, मैं जान गया हूं, कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके आधीन नहीं है।" (यिर्मयाह 10:23)। बुद्धिमान प्रचारक सुलेमान कहता है, "ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा दीख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है। (नीतिवचन 16:25)।

क्या आप अपनी आत्मा के लिये रिस्क तो नहीं ले रहे हैं? क्या आप अपने बच्चों और प्रियजनों की आत्मा के साथ जुआ तो नहीं खेल रहे? यदि हम पहिले से ही यह जानते हैं कि परमेश्वर की बातों को न मानने का परिणाम क्या होगा तब हम पूरा प्रयत्न करेंगे ताकि उनकी आत्मा खो न जाये। पौलूस कहता है, "सब बातों को परखो, जो अच्छी हैं उन्हें पकड़े रहो।" (1थिस्सु 5:21)।

यदि आप यीशु के उद्धार को प्राप्त करना चाहते हैं तो अपनी बाइबल का अध्ययन कीजिये तथा इसकी अज्ञाओं को मानिये ताकि आपकी आत्मा तथा आपके प्रियजनों की आत्मा का उद्धार हो सके।